Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 7

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

15 फरवरी 2018 ई. 28 जमादी अव्वल 1439 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

ये तीन उसूल हैं जिन की सुरक्षा हमारी जमाअत को करनी चाहिए और जिन में उच्च से उच्च नमूने दिखलाने चाहिए।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हमारी सारी नसीहतों का सार तीन बातें हैं **प्रथम** यह कि ख़ुदा तआला के अधिकारों को याद कर के उस की इबादत और उस की इताअत में लीन रहना, उस के सम्मान को दिल में बिठाना और उस से सब से अधिक मुहब्बत रखना और उस से डर कर नफ्सानी भवनाओं को छोड़ना और उस का वाहिद और साझी रहित जानना और उस के लिए पवित्र जीवन रखना और किसी इंसान या दूसरी सृष्टि को उस के बराबर न ठहराना, और वास्तव में उस को सारी रूहूं और जिस्मों का पैदा करने वाला और मालिक विश्वास करना, **द्वितीय** यह कि सारी मानव जाति के साथ सहानुभूति के साथ व्यवहार करना और अपनी शक्ति के अनुसार प्रत्येक से भलाई करना और कम से कम यह कि भलाई का इरादा करना, **तृतीय** यह कि जिस गावर्मेंट की छत्र छाया में ख़ुदा ने हम को कर दिया है अर्थात गावर्मेंट बर्तानिया जो हमारी इज़्ज़त तथा जान माल की सुरक्षा करने वाली है उस की सच्ची भलाई चाहना और इस प्रकार के अमन को दूर करने वाली बातों से दूर रहना जो उस को पेरेशानी में डालें। ये तीन उसूल हैं जिन की सुरक्षा हमारी जमाअत को करनी चाहिए और जिन में उच्च से उच्च नमूने दिखलाने चाहिए।

(किताबुल- बरिय्या, रूहानी ख़ज़ायन, खंड 13, पृष्ठ 14)

☆ ☆ ☆

123 वें जलसा सालाना कादियान की संक्षिप्त रिपोर्ट (जलसा सालाना के आरम्भ से 126वां साल) (भाग-3)

अहमदियत के केन्द्र कादियान दरुल-अमान में 123 वें जलसा सालाना का सफल आयोजन।

☆ मुस्लिम टेलीविज़न अहमदिया इन्ट्रनेश्नल के द्वारा हज़रत अमीरुल-मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के जलसा में शामिल होने वालों को ईमान वर्धक समापन ख़िताब। ☆ देशों का प्रतिनिधित्व, 20,048 अहमदियत के परवानों का जलसा में शामिल होना। ☆ हुज़ूर अनवर के समापन सत्र के अवसर पर लंदन में 5,300 अहमदियत के परवानों का शामिल होना। ☆ नमाज़ तहज्जुद, ☆ दर्सुल कुरआन और ज़िक्र से परिपूर्ण वातावरण ☆ उलमा की महत्त्वपूर्ण तकरीरें, ☆ सर्व धर्म सम्मेलन का आयोजन, सम्माननीय मेहमानों की परिचयात्मक तकारीरें ☆ घरेलू और विदेशी भाषाओं में अनुवाद ☆ जमाअत के दोस्तों की जानकारी में वृद्धि के लिए प्रशिक्षण पर आधारित डॉक्यूमेंट्री और विभिन्न जानकारीपूर्ण प्रदर्शनियों का आयोजन। ☆ 32 निकाहों का एलान ☆ प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में जलसा की कवरेज ☆ शांत और सुखद मौसम में जलसा की सभी कार्रवाई की तकमील। 20 से 22 दिसंबर अरबी कार्यक्रम "इस्मउ सौतस्समा जाअल मसीह जाअल मसीह" का कादियान के एम टी ए से सीधा प्रसारण , 3 से 5 जनवरी The Messiah of the Age के विषय पर अफ्रीका के लिए लाइव कार्यक्रम का प्रसारण

30 दिसंबर 2017

दूसरे दिन - पहला इज्लास

दूसरे दिन के पहले सत्र की कार्रवाई आदरणीय सय्यद तनवीर अहमद साहिब सदर मजलिस अंजुमन वक्फ जदीद कादियान की अध्यक्षता में शुरू हुई। तिलावत कुरआन सूर: आले इमरान आयत 103 से 106, आदरणीय डॉ मुहम्मद शमसुद्दीन साहिब ने की जिसका उर्दू अनुवाद आदरणीय ताहिर अहमद तारिक साहिब उप नाज़िर इस्लाहो इर्शाद मर्कज़िया ने पेश किया। इसके बाद आदरणीय मुर्शिद अहमद डार साहिब और उनके साथियों ने सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि का मंज़ूम कलाम

दुश्मन को ज़ुल्म की बरछी से तुम सीना व दिल बरमाने दो
यह दर्द रहेगा, बन के दुआ तुम सब्र करो वक्त आने दो।

तराने के रूप में पढ़ा।

इजलास की पहली तक़रीर आदरणीय सैयद आफताब अहमद नय्यर साहिब इन्चार्ज अहमदिया केन्द्रीय पुस्तकालय कादियान ने " नबुव्वत की पद्धति पर ख़िलाफत की स्थापना और उसकी बरकतें" के विषय पर की। आप ने सूर: अन्नूर आयत 56 की तिलावत की और कहा कि अल्लाह तआला की यह निरन्तर आदत है कि मानव जाति को जीवन की सही अवधारणा से अवगत कराने के लिए हर समय में नबियों को भेजता हूं। ये सब नबी और रसूल कुरआन के आदेश اِنِّیۡ جَاعِلٌ فِی الۡاَرۡضِ خَلِیۡفَۃً के अनुसार ख़ुदा तआला के प्रतिनिधि और ख़लीफा बन कर आते रहे। यह अल्लाह तआला की तरफ से भेजे हुए नेकी और तक्वा पर आधारित जमाअत की नींव डालकर इस नश्वर दुनिया से जाते हैं। फिर उसके शीघ्र बाद ख़ुदा तआला उनकी बेसत के उद्देश्य को पूरा करने के लिए नबुव्वत की पद्धति पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़िलाफत की स्थापना करता है जो वास्तव में नबुव्वत की परिपूर्णता होती है । इसी की ओर इशारा करते हुए हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि مَامِنْ نَبُوَّةٍ قَطُّ اِلَّا تَبِعَتْهَا خِلَافَةٌ (कनज़ुल उम्माल, जिल्द 3, पृष्ठ 119) यानी प्रत्येक नबुव्वत के बाद उसके अनुसरण में ख़िलाफत जारी होती है। इसी संदर्भ में आप ने यह हदीस भी वर्णन फरमाई कि तुम में नबुव्वत स्थापित रहेगी जब तक अल्लाह तआला चाहेगा फिर उसे उठा लेगा। फिर नबुव्वत की पद्धति पर ख़िलाफत की स्थापना की जाएगी। फिर अल्लाह तआला जब चाहेगा इस नेअमत को उठा लेगा । फिर उस की तकदीर के अनुसार कष्ट पंहुचाने वाली बादशाहत स्थापित होगी। यहां तक कि अल्लाह तआला की दया जोश में आएगी और इस ज़ुल्म का दौर ख़त्म हो जाएगा। इसके बाद, नबुव्वत की पद्धति पर ख़िलाफत फिर से स्थापित होगी। उसके बाद आप ख़ामोश हो गए। (अहमद बिन हंबल)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु के बाद नबुव्वत की पद्धति पर ख़िलाफत स्थापित हुई लेकिन जब ख़िलाफत हक्का इस्लामिया की अवहेलना की गई तो मुसलमानों से अल्लाह तआला ने यह महान नेअमत ले ली। फिर औपचारिक ख़िलाफत शुरू हुई। ठीक उस समय जब यह औपचारिक ख़िलाफत जो तुर्की हुकूमत और ख़िलाफत उस्मानिया के नाम से दम तोड़ रही थी ख़ुदा तआला की दया जोश में आई और इस्लाम की डूबती हुई नाव को विरोध के तूफानों और दुश्मनों के घेरे से बचाने और इस्लाम की महानता को पुनर्स्थापित करने के लिए अल्लाह तआला ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आध्यात्मिक पुत्र हज़रत अक़दस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी को बतौर मसीह मौऊद भेजा जिनके द्वारा आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार नबुव्वत की पद्धति पर ख़िलाफत पुन: आरम्भ हुई। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफात के बाद सालेहीन की जमाअत, 27 मई 1908 को सय्यदना हज़रत हकीम नूरुद्दीन के हाथ पर एकत्रित हो गई। और यूं दूसरी कुदरत प्रकट हुई और जमाअत अहमदिया में ख़िलाफत की बरकतों से लाभांवित हुई। इस्लामी ख़िलाफत का यह भव्य आशीर्वाद अल्लाह तआला ने وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمْ में वर्णन किया है। वर्तमान युग में बावजूद इसके कि मुसलमानों की अनगिनत संगठन, जमाअतें यहां तक कि मज़बूत सरकारें भी हैं लेकिन समय के विरोध का मुकाबला करने में सब की सब विफल अलग-अलग आपदाओं का शिकार हैं इसके मुकाबले ख़िलाफत अहमदिया के द्वारा सारे संसार में इस्लाम का प्रचार और शिक्षा और प्रशिक्षण के क्षेत्र में भव्य क्रांति घटनाएं घटित हो रही हैं।

साफ दिल को कसरते एजाज़ की हाजत नहीं।
इक निशां काफी है जब दिल में हो ख़ौफे किरदगार।

इस सत्र की दूसरी तक़रीर आदरणीय शिराज़ अहमद साहिब एडिशनल नाज़िर आला दक्षिण भारत और नाज़िर तालीम कादियान ने "हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरहिल अज़ीज़ की ईमान वर्धक व्यस्तता और जमाअत की जिम्मेदारियां" के विषय पर की। आपने अपने तक़रीर में वर्णन किया है कि हमने बार-बार सुना है कि हमारे जीवन का उद्देश्य सुनना और पालन करना है। सुनो और पालन करो। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें यह समझाया है कि चारों ख़लीफाओं की नसीहत और सुन्नत पर चलने की कोशिश करें। इसलिए हदीस में आता है कि अल्लाह तआला का तक्वा धारण करो। बात सुनो और इताअत करो, चाहे तुम्हारा अमीर एक इथियोपिया का ग़ुलाम हो क्योंकि ऐसा समय आने वाला है कि अगर तुम में से कोई मेरे बाद जीवित रहा तो बहुत बड़े मतभेद देखेगा। अत: इस नाज़ुक हालत में मेरे और मेरे निर्देशित चारों ख़लीफाओं की सुन्नत का पालन करना और उस पर मजबूती से स्थापित हो जाना (मुस्नद अहमद)

हम सभी जानते हैं कि समय का ख़लीफा हमारा रोल मॉडल है। अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त करने के लिए समय के ख़लीफा की नसीहतें और आप की सुन्नत पर चलना बहुत ज़रूरी है क्योंकि समय का ख़लीफा अल्लाह तआला का प्रतिनिधि होता है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मसीह मौऊद की सीरत कैसे पालन करना चाहिए वह समय के ख़लीफा से हमें सिखाना। रिफ़्त खामसह के धन्य दूर हमें हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की सीरत के कई पहलू आबिद खान की डायरी से मिल जाते हैं हुज़ूर अक़दस से एक सवाल किया गया था कि समय के ख़लीफा की आज्ञाकारिता और प्रेम में कैसे बढ़ा जा सकता है? इस पर हुज़ूर अनवर ने कहा कि समय के ख़लीफा की बातों को बहुत ध्यान से सुनो और समय के ख़लीफा से सबसे ज्यादा प्यार करो तो समय के ख़लीफा का पालन करना और प्रेम में तरक्की करोगे। हज़ूर फरमाते हैं कि मैं कोई निर्णय लेने से पहले अल्लाह तआला के पास झुकता हूँ अपनी कमज़ोरियों के लिए इस्तिग़फार करता हूँ। फिर कोई निर्णय करता हूँ।

इज्लास की तीसरी तक़रीर आदरणीय मौलाना असफनद यार मुनीब साहिब प्रभारी तारीख़ अहमदियत रबवा ने "सीरत हज़रत इमाम हुसैन रज़ि और हज़रत मौलवी अब्दुल रहमान साहिब रज़ि आफ अफग़ानिस्तान" के विषय पर की। आप ने सूर: अहज़ाब की आयत नंबर 24 की तिलावत करने के बाद कहा कि मज़लूम कर्बला, सय्यदुश्शहदा, नवासा रसूल, फातिमा और अलीके डिगर के टुकड़े इमाम हुसैन के जन्म से पहले रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की चाची हज़रत उम्मे फज़ल ने एक सच्ची रोया में देखा कि अल्लाह तआला के रसूल के शरीर के अंग का एक टुकड़ा उनकी गोद में आ गिरा है इस पर मुख़बरे सादिक ने व्याख्या करते हुए कहा कि फातिमा के यहाँ लड़का पैदा होगा और तुम उसे गोद में लोगी। अत: व्याख्या के अनुसार बस्तान नबवी में 5 शाबान 4 हिजरी को एक ऐसा फूल खिला जिस की खुशबू सच्चाई और धर्म, साहस और बहादुरी, प्रतिबद्धता और दृढ़ता, विश्वास और कर्म और त्याग और निष्ठा की घाटियों को हमेशा सुगंधित रखेगी।

हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाह तआला बहुत सुन्दर थे। और शक्ल तथा सूरत में एक तरह से अपने नाना से मिलते जुलते थे। हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाह तआला जहां ने अपने बुज़ुर्ग बाप दादा से गुणों को प्राप्त किया वहां बहादुरी का गुण भी विरसा में पाया कि आप बहादुरों में सब से बहादुर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नवासे और ज़लफिकार अली अलमुरतज़ा रज़ि अल्लाह तआला के साहिबज़ादे थे। अत: हज़रत उसमान की ख़िलाफत के समय में जब मदीने में बाग़ियों का कब्ज़ा हो गया तो हसन तथा हुसैन रज़ि अल्लाह अन्हुमा ही थे जो हज़रत उसमान की हिफाज़त के लिए ख़िलाफत का मकान के सामने नंगी तलवारें ले कर खड़े थे।

सन 51 हिजरी में हज़रत अमीर मुआविया ने अपने बाद साम्राज्य के प्रबंधन और काम के लिए लिये अपने बेटे यज़ीद को उत्तराधिकारी निर्धारित कर दिया और लोगों से कहा कि अगली ख़िलाफत और इमारत के लिए अभी से बैअत लें। हज़रत हुसैन ने इस मार्ग को ख़लीफ़ा चुनने के विपरीत पाकर बैअत करने से मना कर दिया। कूफ़ा वालों को जो यज़ीद की बैअत पर आमादा न थे जब इस बात की खबर मिली तो उन लोगों ने बीस हज़ार के करीब ख़त आपकी सेवा में लिखे कि आप हमारे शहर में पधारें, हम आपके आज्ञाकारी होंगे। तो हज़रत हुसैन ने मुस्लिम इब्न अकिल को कूफा भेज दिया। लोगों शौक से बैअत तथा मुलाकात के लिए आने लगे। अकील ने हज़रत हुसैन को लिखा था कि आप को बिना किसी देरी के आना चाहिए। तो हज़रत हुसैन 8 ज़ुलहिज्जा 60 हिजरी को अपने घर वालों के साथ मक्का से कूफा के लिए रवाना हो गए। ये सभी रिपोर्ट जब यज़ीद को मिले थे, तो उसे ख़तरा मिला कि सत्ता और शक्ति हाथ से बाहर न निकल जाए। उन्होंने उबैदुल्लाह बिन ज़ैड को कूफा का गवर्नर नियुक्त किया और उन्होंने मुस्लिम इब्न अकील को उन के साथियों के साथ कत्ल कर दिया।

हज़रत हुसैन काफिला को सअलबा के स्थान पर इस दु:खद घटना की ख़बर मिली। जब दु:ख का यह कारवां ज़ीहश्म स्थान पर पुहंचा, तो हुर बिन याज़ीद की सेना ने आप को घेर लिया। हुर ने कहा कि हमें आदेश मिला है कि आपको गिरफतार करे के इब्ने ज़याद के पहुंचा दिया जाए। हज़रत हुसैन के इनकार के बावजूद हूर ने घेराव जारी रखा। हुर ने काफिले वालों को करबला की धरती पर रोक दिया। यह 2 मुहर्रम और 61 हिजरी था। 3 मुहर्रम को उमरो बिन सअद चार हज़ार का लशकर लेकर कर्बला पहुंचा। उमरो ने इब्ने ज़याद को लिखा है कि अल्लाह तआला ने जंग के शोलों को ठंडा कर दिया है लेकिन अफसोस कि इब्ने ज़याद ने सब से पहले बैअत का पूछा और सात महरम को एक संदेश भेजा कि कारवां पर पानी बंद कर दिया जाए। अत: फरात के दरिया का पानी उन पर बंद कर दिया गया। लेकिन यह ज़ुल्म व बर्बरता भी हज़रत हुसैन को झुका न सकी और उनके इस सिद्धांत से हटा न सकी कि "ख़िलाफत का अधिकार देश वालों को है, कोई बेटा अपने पिता के बाद बतौर विरासत इस अधिकार पर काबिज़ नहीं हो सकता। "

आख़िर 10 मुहर्रम को यज़ीद की फौज और 70 से अधिक लोग मैदान में निकले। काफिला हुसैन के सवार बहादुरी से लड़ते हुए करबला की भूमि को अपने लहू से रंगते रहे और हुसैन के भाई भतीजे और जवान बेटे एक के बाद एक अपनी जानें कुर्बान करते चले गए। जब अस्त्र का समय हुआ तो अत्याचारियों ने हर तरफ से घेर लिया और उनमें से एक ने तीर माथे पर चलाया तो हज़रत हुसैन का चेहरा मुबारक घायल हो गया। दूसरे ने तलवार से वार किया, तो हाथ और बाज़ू घायल हो गए। फिर एक के बाद दूसरे हमले हमले होने लगे और जब आप ज़ख्मों से चूर

पृष्ठ 12 पर शेष

ख़ुत्बः जुमअः

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़बरदस्त कुव्वते कुदसिया का ईमान वर्धक वर्णन, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़बरदस्त कुव्वते कुदसिया से सहाबा में ग़ैर मामूली तब्दीलियां पैदा हो गईं। उज्जड़ और गन्दगी में डूबे हुए लोगों को शिक्षा वाला इंसान बना दिया और ख़ुदा वाला इंसान बना दिया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा का ईमान वर्धक वर्णन और जमाअत के लोगों को सहाबा का आदर्श अपनाने की नसीहत।

आदरणीया अमतुल मजीद अहमद साहिबा पत्नी चौधरी नासिर अहमद साहिब(नायब अमीर यू. के और इन्चार्ज मर्कज़ी जायदाद विभाग) की वफात, मरहूमा का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 12 जनवरी 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलान आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कुव्वते कुदसिया का ज़िक्र करते हुए फरमाते हैं कि

"मेरा धर्म यही है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कुव्वते कुदसिया ऐसी थी कि किसी दूसरे नबी को दुनिया में नहीं मिली। इस्लाम की तरक्की का राज़ यही है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जज़ब की शक्ति ज़बरदस्त थी और फिर आप की बातों में वह प्रभाव था कि जो सुनता था वह फिदा हो जाता था।" फरमाते हैं कि " जिन लोगों को आप ने खींचा उन्हें साफ कर दिया।"

फिर इस बात को वर्णन करते हुए कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा में किस प्रकार का परिवर्तन पैदा किया आप फरमाते हैं कि

"सहाबा की स्थिति को देखते हुए तो उन में कोई झूठ बोलने वाला नज़र नहीं आता। हालांकि जब वे अरबों की प्रारंभिक अवस्था देखते हैं, तो वे पाताल में पड़े हुए नज़र आते हैं। बुतों की इबादत में डूबे हुए थे। यतीमों का माल खाने और प्रत्येक प्रकार की बुराइयों में दलेर और बहादुर थे। लुटेरों की तरह गुज़ारा किया करते थे। मानो सिर से पैर तक गन्दगी में डूबे हुए थे। " (लेकिन ऐसी क्रांति आप ने पैदा की जिसकी मिसाल दूसरी जातियों में नहीं मिलती और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यही चमत्कार इतना बड़ा है कि आप ने एक स्थान पर यह फरमाया कि) "दुनिया की आंखें खोलने के लिए पर्याप्त है। "

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम एक स्थान पर फरमाते हैं कि

"एक आदमी का सुधारना मुश्किल होता है। "(बहुत मुश्किल है कि किसी एक व्यक्ति का भी सुधार किया जाए।) " लेकिन यहां तो एक क़ौम तैय्यार की गई जिन्होंने अपने ईमान और श्रद्धा का वह नमूना दिखाया कि भेड़ बकरी की तरह इस सच्चाई के लिए ज़िब्ह हो गए जिस को उन्होंने धारण किया। वास्तविकता यह है कि वे ज़मीन के न रहे, बल्कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शिक्षण, मार्गदर्शन और प्रभावी उपदेश ने उन्हें स्वर्गीय बना दिया। कुव्वते कुदसिया का गुण उनमें पैदा हो गया था ... यह वह नमूना है जो हम इस्लाम का दुनिया के सामने पेश करते हैं। " आप फरमाते हैं कि " इसी सुधार और निर्देशित का कारण था जो अल्लाह तआला ने भविष्यवाणी के रूप में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम मुहम्मद रखा जिस से ज़मीन पर आप की प्रशंसा हुई क्योंकि आप ने ज़मीन को अमन और सुलह और उच्च चरित्र और नेकियों से भर दिया।

(उद्धरित मलफूज़ात भाग खंड 3, पृष्ठ 84 से 86, संस्करण 1985 ई इंग्लैंड)

आज भी हम देखते हैं कि न्याय से काम लेने वाले इस बात को स्वीकार किए बिना नहीं रह सकते हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उज्जड़ और गन्दगी में डूबे हुए लोगों को शिक्षा वाला इंसान बना दिया और ख़ुदा वाला इंसान बना दिया।

कुछ साल हुए एक यहूदी विद्वान मुझसे मिलने आया और कहा कि यद्यपि यहूदियों को मस्जिद अक्सा में जाने की अनुमति नहीं है। मैं वहां गया और इसे देख कर आया। उन्होंने उस को देखने का जो विस्तार मुझे बताया वह बहुत लम्बा था।। बहरहाल फरमाते हैं वहां दिखाने वाला जो पर्यवेक्षक था, उसे मुझ पर संदेह था कि यह मुस्लिम नहीं है। फरमाते हैं कि हर बार मैं कोई ऐसी बात करता उन्हें मुसलमान होना प्रतीत होता था यहां तक कि वहाँ के निगरान को तसल्ली दिलाने के लिए यह यहूदी कहने लगे कि मैंने ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह के शब्द भी पढ़ दिया। जब मैं मस्जिद को अच्छी तरह से देख चुका तो अभिभावक ने मुझे बताया कि आपने यह शब्द भी पढ़े हैं, लेकिन मुझे अभी भी आपके मुस्लिम होने पर संदेह है। मैं सहमत नहीं था। अब तुमने देखा है, अब मुझे बताओ कि सच्चाई क्या है? मैंने उन्हें बताया कि तुम सही हो। मैं एक मुस्लिम नहीं हूं और मैं एक यहूदी हूं। जहाँ तक कलिमा पढ़ने का सवाल है, मैं अल्लाह तआला में विश्वास करता हूं। अल्लाह के अलावा अन्य कोई ईश्वर नहीं है, और जो मैंने मुहम्मद रसूलुल्लाह के तौर पर कहा था, मेरा यह भी मानना है कि क्योंकि मैं अरबों के इतिहास के बारे में जानता हूं, उस समय के दौरान अरबों की स्थिति क्या थी? अरबों की स्थिति आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दावे से पहले एक नबी ही ठीक कर सकता था। कोई भी सांसारिक नेता उस स्थिति को बदल नहीं सकता था इस लिए बावजूद मैं आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर विश्वास लाऊं या न लाऊं मैं उन्हें ख़ुदा तआला का भेजा हुआ नबी समझता हूं। बावजूद इस ने दुनियादारी के आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस महान क्रांति लाने को स्वीकार किया।

तो आज भी अगर कोई न्याय की दृष्टि से देखे तो सहाबा में जो असामान्य परिवर्तन आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कुव्वते कुदसिया से पैदा हुई वह यह स्वीकार किए बिना नहीं रह सकते हैं कि वास्तव में आप ख़ुदा तआला के रसूल थे। सहाबा के बारे में, उनके असाधारण स्थान के बारे में, उनमें असाधारण परिवर्तन पैदा होने के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक अवसर पर फरमाते हैं कि " सहाबा की मिसाल देख लो। वास्तव में, सहाबा के नमूनें ऐसे हैं कि सारे नबियों के उदाहरण हैं। ख़ुदा तआला को तो व्यवहार ही प्यारा है उन्होंनें अपनी जानें बकरियों की तरह से दीं और उनका उदाहरण है जैसे कि नबुव्वत का एक मअबद आदम अलैहिस्सलाम से चला आया था।"(अर्थात जो शक्ल और आकार और नबुव्वत की एक अवधारणा है जो आदम के समय से चली आती है। परन्तु) फरमाते हैं कि " और समझ न आती थी मगर सहाबा ने चमका कर दिखला दिया और बतला दिया कि सच्चाई और वफ़ा इसे कहते हैं।" फिर आप फरमाते हैं कि " फिर जैसी असुविधा का जीवन उन्होंने बिताया उसकी मिसाल कहीं नहीं पाई जाती। सहाबा का समूह एक अजीब और अनुकरण योग्य समूह था। उनके दिल आत्मविश्वास से भरे हुए थे।" आप फरमाते हैं,"जब भी विश्वास होता है तो धीरे-धीरे धन इत्यादि देने को जी चाहता है। फिर जब यह बढ़ता है, तो विश्वास करने वाला ख़ुदा तआला के लिए जान देने को तैयार हो जाता है।"

(मल्फूज़ात, खंड 5, पृष्ठ 42, संस्करण 1985, यूनाइटेड किंगडम)

फिर सहाबा की फज़ीलत बयान फरमाते हुए एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि

"لَّا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَّ لَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ (अन्नूर: 38)" (कुरान शरीफ में अल्लाह तआला फरमाता है कि जिन्हें न कोई व्यापार और न कोई ख़रीद और बिक्री अल्लाह तआला के ज़िक्र से असावधान करती।) आप इस की व्याख्या करते हुए फरमाते हैं कि " यह एक ही आयत सहाबा के पक्ष में पर्याप्त है कि उन्होंने बड़े बड़े परिवर्तन किए थे और अंग्रेज़ भी इस को मानने वाले हैं कि उनकी कहीं मिसाल मिलना मुश्किल है। उज्जड़ लोग और इतनी बहादुरी और साहस आश्चर्य होता है। "

(मल्फूज़ात, खंड 5, पृष्ठ 304, संस्करण 1985, यूनाइटेड किंगडम)

फरमाते हैं कि, "वे ऐसे आदमी हैं कि उन्हें अल्लाह की याद न व्यापार से रोक सकती है, न ही ख़रीद तथा फरोख़्त रुकावट बनती है अर्थात अल्लाह तआला की मुहब्बत में इतनी पूर्णता रखते हैं कि सांसारिक व्यस्तता कैसी भी अधिक हो उन की अवस्था में कोई व्यवधान नहीं डालतीं।"

(ब्राहीन अहमदिया, खंड 1, पृष्ठ 617,हाशिया।)

फिर आप फरमाते हैं, "याद रखो कि पूर्ण बन्दे अल्लाह तआला के ही होते हैं जिन के बारे में अल्लाह तआला ने फरमाया है कि لَّا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَّ لَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ जब दिल ख़ुदा तआला के साथ सच्चा सम्बिन्ध और इश्क पैदा कर लेता है तो वह उस से अलग होता ही नहीं। इस की एक स्थिति इस प्रकार समझ आ सकती है जैसे किसी की बच्चा बीमार हो तो चाहे वह कहीं काम में व्यस्त हो, लेकिन उसका दिल और उसका दिमाग बच्चे में ही रहेगा। इसी तरह, जो लोग ख़ुदा तआला के साथ सच्चा रिश्ते पैदा करते हैं और ख़ुदा तआला से प्यार करते हैं, वे किसी भी अवस्था में ख़ुदा तआला को नहीं भूलते।"

(मल्फूज़ात, भाग 7, पृष्ठ 20 से 21, संस्करण 1985 ई)

अत: सहाबा रिज़वानुल्लाह ने वह सच्चा संबंध और प्रेम ख़ुदा तआला से पैदा कर लिया था कि सवाल ही नहीं था कि वह किसी भी तरह ख़ुदा तआला से अनजान हों या किसी भी कुरबानी से वह मुहं मोड़ने वाले हों। सहाबा के कई उदाहरण हैं।

हज़रत ख़बाब बिन अल्अरत के बारे में आता है जब उनकी मृत्यु का समय क़रीब आया तो अल्लाह तआला का इतना भय और डर था कि उन्होंने अपना कफन देखने के लिए मंगवाया और देखा तो वह एक उत्कृष्ट कपड़े का कफन था। अपने प्रियजनों से कहा, क्या आप मुझे ऐसा अच्छा कफन दोगे? और रो पड़े और कहने लगे कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चाचा हज़रत हमज़ा को एक चादर कफन के लिए मयस्सर हुई थी और वह भी इतनी छोटी कि पैर ढको तो सिर नंगा हो जाता था। जब सिर को ढांकते तो पैर नंगा हो गए। तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मार्गदर्शन में पांव को घास के साथ ढांप दिया गया था। फिर बहुत भय से कहने लगे कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में एक दीनार या दिर्हम का भी मालिक नहीं था और आज आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़ैज़ की बरकत से अल्लाह तआला के पुरस्कारों की वजह से, उन कुरबानी को स्वीकार करने के कारण से, अल्लाह तआला ने मुझे इतना धन दिया है कि मेरे घर के कोने में जो संदूक पड़ा है इस में ही 40000 दिरहम पड़े हुए हैं कहने लगे कि "अल्लाह तआला ने मुझे इतना कुछ दिया है कि मुझे डर है कि अल्लाह तआला ने हमें इस दुनिया में हमारे कर्मों का इनाम न दे दिया हो, और अंतिम जीवन में जो बदला है उन से कहीं वंचति न कर दिया जाओं।" उन की आख़री बीमारी में, जब सहाबा उन को देखने के लिए गए और उन्हें यह विश्वास दिलाया कि लगता है कि आप अपने बुज़ुर्ग सहाबा से मिलने जा रहे हैं, तो रो पड़े और सात ही यह कहने लगे कि यह न समझना कि मैं मौत से डर कर रो रहा हूं बल्कि जिन सहाबी का तुम ने अभी वर्णन किया है उन का स्थान बहुत उंचा था पता नहीं मैं उन का भाई होने के योग्य हूं या नहीं। कहने लगे, "वे लोग हम से पहले गुज़र चुके,उन्होंने सांसारिक धन और दौलत जिस से हम लाभ उठा रहे हैं उस से लाभ नहीं उठाया। अल्लाह तआला के भय और डर का यह स्थान था, कि आप अपने आप को बहुत कमज़ोर समझते थे। अल्लाह तआला का डर था, चिन्ता थी कि ख़ुदा तआला राज़ी भी होता है कि नहीं और यही दुआ थी कि अल्लाह तआला प्रसन्न हो जाए।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने साद, जिल्द 3, पृष्ठ 88 से 89, ख़बाब बिन अल्लअरत, मुद्रित दारुल अहयाय अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई)

आपके कुरबानी और धर्म की सेवा किसी से भी कम नहीं थी। हज़रत अली रज़ि अल्लाह जब ख़लीफा हुए तो हज़रत अली रज़ि अल्लाह तआला ने उन का जनाज़ा पढ़ाया। और उन के बारे में ऐतिहासिक शब्द कहे। इन शब्दों से ही, हज़रत ख़बाब के स्थान का अनुमान हो जाता है। आपने फरमाया "अल्लाह तआला ख़बाब पर रहम करे उसने बहुत प्यार और धैर्य के साथ इस्लाम को स्वीकार किया, और फिर हिजरत की तौफीक़ पाई। फिर जो जीवन उन्होंने व्यतीत किया वह एक मुजाहिद का जीवन था। वह बड़ी परीक्षाओं में गुज़रे और एक बहुत धैर्य और सब्र का नमूना दिखाया। हज़रत अली रज़ि ने फिर फरमाया कि अल्लाह तआला ऐसे लोगों के इनाम को बर्बाद नहीं करता जो नेक कर्म करने वाले हों।

(असदुल ग़ाबा, जिल्द 1, पृष्ठ 677, ख़बाब बिन अल्अरत, मुद्रित दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई)

हज़रत ख़बाब का जो स्थान हज़रत उमर रज़ि की नज़र में था वह भी देखें कैसा महान था। एक बार, हज़रत उमर ने ख़बाब को बुला कर अपने बैठने के स्थान पर बिठाया और कहा कि ख़बाब आप इस योग्य हैं कि मेरे बैठने के स्थान पर बैठें। मैं नहीं समझता के केवल बिलाल के अतिरिक्त और कोई मेरे इस स्थान पर बैठने के योग्य है उन्होंने अर्थात हज़रत बिलाल ने भी आरंम्भिक युग में इस्लाम स्वीकार कर के कष्ट सहन किए थे। हज़रत ख़बाब ने निवेदन किया कि हे अमीरुल मोमिनीन बेशक बिलाल ने आरंम्भिक समय में कष्ट सहन किए लेकिन हज़रत बिलाल को मुशरेकीन से बचाने वाले मौजूद थे अत: हज़रत अबू बकर ने आप को ख़रीद कर आज़ाद कर दिया परन्तु मेरा तो कोई भी मौजूद नहीं था जो मुझे इस ज़ुल्म से बचाता और एक दिन ऐसा भी आया कि मुझे काफिरों ने पकड़ लिया और आग में डाल दिया और एक ज़ालिम ने मेरे सीने पर पैर रख दिया जो मेरे लिए इस आग से निकलना संभव नहीं रहा। मेरी पीठ कोयलों पर पड़े पड़े जल गई। कोयला जला कर इन्हें इस पर निकाल दिया और फिर हज़रत ख़बाब ने अपनी पीठ पर से कपड़ा उठाकर दिखाया जहां सफेद धारियाँ के निशान पड़े हुए थे। उन्होंने बताया कि दहकते कोयले पर लेटने के कारण यह निशान पड़े हुए हैं। चर्बी पिघल गई थी। चमड़ी पिघल गया था तब यह सफेद खाल बाहर आ गई। हजरत ख़बब, बदर और खंदक के युद्ध में शामिल हुए थे इसके अलावा उहद में शामिल हुए इस के बावजूद, मृत्यु के समय, यह चिंता है कि ख़ुदा तआला जानता है कि वह राज़ी भी होता है चाहे या नहीं।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने साद, जिल्द 3, पृष्ठ 88, ख़बाब बिन अलअरत, दारुल अहयाय अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996)

फिर मुआज़ बिन जबल एक सहाबी थे उनके बारे में आता है कि तहज्जुद अदा करने वाले और लंबी इबादत करने वाले थे। उन की तहज्जुद की नमाज़ का उनके क़रीबी रिश्तेदारों ने इस प्रकार नक्शा खींचा है कि अल्लाह तआला के समक्ष निवेदन करते कि हे मेरे मौला! इस समय सब सोए हुए हैं। आंखें सोई हुई हैं। हे अल्लाह, तू जीवित और जीवित करने वाला है। मैं तुमझ से जन्नत को मांगता हूं लेकिन मैं इस में कुछ धीमा हूँ। अर्थात मैं कर्म करने में धीमा हूं और मैं आग से दूर भागने में कमजोर और असमर्थ हूं मुझे पता है कि नरक की आग भी है और इस के लिए नेकिया करनी पड़ती हैं, लेकिन मैं इस से बचने के लिए बहुत कमजोर हूँ। हे अल्लाह तआला तू मुझे अपने पास से निर्देश दे और वह निर्देश दे जो मुझे कयामत के दिन भी नसीब हो जिस दिन तू अपने वादे के खिलाफ नहीं करेगा। अल्लाह तआला के मार्ग में बहुत खर्च करते थे और खर्च करने के कारण उन पर कर्ज़ भी चढ़ जाता था।

(असदुल ग़ाबा, जिल्द 4, पृष्ठ 402, मुआज़ बिन जबल, मुद्रित उत्तरदायी दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई)

हज़रत काब बिन मालिक के बेटे हज़रत मुआज़ के बारे में बताते हैं कि अल्लाह तआला का हज़रत मुआज़ के साथ अजीब व्यवहार था। वह भी बहुत सुन्दर भी थे। बहुत दाता थे। उनकी दुआएं भी बहुत स्वीकार होती थीं। जो अल्लाह तआला से मांगते अल्लाह तआला उन्होंने प्रदान भी कर देता था। अल्लाह तआला का एक विशेष मामला उन से था। यदि कर्ज़ चढ़ते भी थे तो उतरने का सामान भी अल्लाह तआला कर देता था। एक अजीब समझ अल्लाह तआला ने उन्हें प्रदान की थी।

(अल्मअजम अलकबीर तिबरानी, जिल्द 20, पृष्ठ 30 से 32 हदीस 44, मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 2002 ई)

अल्लाह तआला से प्रेम के कारण इन सहाबा को आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से भी प्रेम था। या आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रेम के कारण से ही ख़ुदा तआला से भी प्रेम पैदा हुआ था क्योंकि अपनी कुव्वते कुदसी के कारण से ही अल्लाह तआला के प्यार का एहसास उन लोगों में पैदा किया था।

जैसा कि उल्लेख हुआ कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कुव्वते कुदसिया ने उनमें एक क्रांति पैदा की थी अन्यथा यह प्रेम और प्रेम की दास्तानें जो हैं कभी लिखी न जातीं। अल्लाह तआला की ख़ातिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जो प्यार था वह भी ऐसा कि जिस के उदाहरण नहीं मिलता। जैसा कि हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने भी वर्णन किया है।

अत: हज़रत श्म्मास बिन उसमान के बारे में इतिहास ने ऐसी घटना संरक्षित की है जो उनकी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रेम का एक उदाहरण बन गया और इस्लाम की ख़ातिर कुरबानी के उच्चतम मानकों को स्थापित करने के लिए भी उदाहरण है। जंगे उहद में जहां हज़रत तलहा की मुहब्बत और प्रेम की कथा का उल्लेख मिलता है कि कैसे उन्होंने अपना हाथ आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरे मुबारक के सामने रखा कि कोई तीर आप को न लगे वहाँ हज़रत श्म्मास का भी बड़ा महान योगदान है हज़रत शम्मास ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने खड़े हो गए और हर हमला अपने ऊपर लिया। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत श्मास के बारे में फरमाया कि श्म्मास की अगर किसी चीज़ से उपमा दूँ तो ढाल की उपमा दूंगा कि वह उहद के मैदान में मेरे लिए एक ढाल ही तो बन गया था। वह मेरे आगे पीछे दाएं और बाएं सुरक्षा करते हुए अन्त तक लड़ता रहा। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिस तरफ नज़र डालते तो आप फरमाते हैं, शम्मास मुझे बहुत बहादुरी से वहां लड़ता हुआ दिखाई दिया। जब दुश्मन आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हमले में सफल हो गया और आप पर बेहोशी की स्थिति तारी हुई। आप गिर गए तब भी शम्मास एक ढाल बन कर खड़ा रहा और यहां तक कि वह बुरी तरह घायल हो गए। इस अवस्था में उन्हें मदीना लाया गया। हज़रत उम्मे सलमा ने कहा कि यह मेरे चाचा के बेटे हैं मैं इन का करीबी रिश्तेदार हूँ इसलिए मेरे घर में उनकी तीमार दारी और इलाज आदि होना चाहिए। लेकिन ढाई दिनों के बाद, घावों की गंभीरता के कारण, वे वफात पा गए। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि शम्मास को भी उन के कपड़ों के साथ दफन किया जाए जिस प्रकार बाकी शहीदों को दफन किया गया है।

(अत्तबकातुल कुबरा ले-इब्ने साद, जिल्द 3, पृष्ठ 131, श्म्मास बिन उसमान, पृष्ठ 115, तलहा बिन उबैद, मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई)

एक सहाबी सईद बिन ज़ैद थे यह हज़रत उमर के बहनोई थे और वही हैं जिन्हें इस्लाम की वजह से मारने के लिए जब उमर ने हाथ उठाया तो उनकी पत्नी और उमर की बहन सामने आ गई और घायल हो गए जिसका असर उमर पर भी ऐसा हुआ कि इस्लाम स्वीकार करने की ओर ध्यान पैदा हुआ।

(सीरत इब्ने हिशाम, पृष्ठ 251 से 252 इस्लाम उमर बिन ख़त्ताब, मुद्रित दारुल कुतूब इल्मिया बैरूत 2001 ई)

हज़रत सईद की अल्लाह तआला के भय के बारे में एक घटना मिलती है कि उनकी एक जागीर पर गुज़र-बसर थी। ज़मीन थी। उसी पर गुज़ारा होता था। एक महिला की ज़मीन भी आपके साथ थी। उस महिला ने आप की ज़मीन पर स्वामित्व का दावा किया था कि आपने मेरी कुछ ज़मीन पर क़ब्ज़ा किया हुआ है। हज़रत सईद ने कहा कोई मुकदमा लड़ने की जरूरत नहीं है और अपनी इस पूरी ज़मीन से हट गए। ज़मीन उस महिला को दे दी और कहा कि मैंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि जो व्यक्ति अन्याय से किसी की ज़मीन एक बालिश्त भी लेता है उसे क़यामत के दिन सात ज़मीनों का बोझ उठाना पड़ेगा। इसलिए मैं यह आरोप ख़ुद पर नहीं लेना चाहता हूं और मैं लड़ाई भी नहीं करना चाहता। लेकिन दुनिया यह भी न कहे कि किसी की भूमि पर क़ब्ज़ा कर लिया है। कोई यह भी कह सकता था कि आप ने एक महिला की ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लिया है और अब यह बात पता लग गई है तो ज़मीन वापस कर रहे हैं आप बहुत अधिक दुआ करने वाले थे। इसलिए अपने आप को इस बात से, इस आरोप से बरी करने के लिए आप ने उस औरत के लिए यह दुआ की कि अगर यह अत्याचार नहीं है और यह ज़ालिम महिला है तो अल्लाह तआला उसे पकड़े और उसका बुरा अंजाम हो। अत: कहने वाले लोग कहते हैं कि वह महिला अंधी हुई थी और नसीहत का निशान बन गई थी।

(सही मुस्लिम किताबुल फरायज़, हदीस 4134)

सही बात कहना और किसी से न डरना सहाबा का सिद्धांत था। हज़रत सईद बिन ज़ैद के बारे में आता है कि एक दिन कूफ़ा में अमीर मुआविया के निर्धारित जो गवर्नर थे वह गवर्नर एक दिन वहाँ जामा मस्जिद में बैठे थे। हज़रत सईद भी वहां आए। राज्यपाल ने उन्हें महान सम्मान और वर्चस्व के साथ स्वागत किया। अपने साथ बिठाया उसी समय कुफ़ा का एक आदमी आया और उसने हज़रत अली रज़ि को बुरा भला कहना शुरु किया। हज़रत सईद को इस पर गुस्सा आया। ऐसा नहीं है कि यदि आप राज्यपाल के सामने बोल रहे हों, तो ज्ञान है कि मुझे चुप रहना चाहिए। और कहा कि मैंने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि अबु बकर, उमर, उस्मान अली, तलहा, ज़ुबैर बिन अवाम, सअद और अब्दुर रहमान बिन औफ जन्नत में होंगे और कहने लगे कि दसवें का भी है। वह नाम नहीं लेता। जब ज़ोर देकर पूछा गया, तो उन्होंने कहा कि वह 10 वां मैं था, अर्थात् सईद बिन ज़ैद।

(अबू दाऊद किताबुल सुन्नत, हदीस 4649-4650)

आप से एक हदीस भी मरवी है कि सबसे बड़ा ब्याज यानी हराम चीज़ मुसलमान के सम्मान पर नाहक हमला।

(अबू दाऊद किताबुल अदब, हदीस 4876)

आज इसी बात को मुसलमानों ने भुला दिया है और बड़े पैमाने से लेकर छोटे मामलों तक हम देखते हैं कि मुसलमान मुसलमान के सम्मान में अपने हितों के लिए हमले करता है।

फिर, एक सहाबी हज़रत सुबैह बिन सन्नान रोमी का वर्णन मिलता है। जब अल्लाह तआला की आज्ञा से मुसलमानों को हिजरत की अनुमति हुई तो हज़रत सुहैब ने भी हिजरत का इरादा किया। आप एक ग़ुलाम के रूप से आज़ाद हुए थे फिर तरक्की की और व्यापार शुरू किया और धीरे-धीरे तरक्की करते करते एक प्रमुख व्यापारी बन गए। व्यापार के माध्यम से बड़ा पैसा अर्जित किया जब हिजरत करके जाने लगे तो मक्का वालों ने कहा कि तुम एक गरीब दास के रूप में हमारे शहर में आए थे हम तुम्हें यहाँ से कमाया हुआ माल हरगिज़ नहीं ले जाने देंगे। आप ने कहा अच्छा, मैं अपना धन छोड़ देता हूं यदि माल छोड़ दूं तो तब तो मुझे जाने दोगे उन्होंने अपनी आधी से अधिक संपत्ति मक्का वालों को सौंप दी और हिजरत का कार्यक्रम बनाया। जब आप अपने परिवार के साथ मदीना की तरफ रवाना हुए। तो कुछ कुरैशी आपके पीछे आए। आप बहुत बहादुर थे। तीर चलाने में भी बहुत माहिर थे और तलवार चलाने में भी बहुत माहिर थे उन्होंने काफिरों को देखकर अपने तरकश के सभी तीर निकाल कर ज़मीन पर फैला दिए और उन को देखकर कहा कि हे क़ुरैश! तुम जानते हो कि मैं तुम से बेहतर तीर चलाने वाला हूं जब तक मेरा आख़री तीर समाप्त न हो जाए तब तक तुम मुझ तक नहीं पहुंच सकते। उसके बाद मेरी तलवार है तुम्हें मेरे साथ लड़ना होगा। तुम मुझे शांति से जाने दो और इसके बदले में जो मेरा शेष माल है जो मैंने अमुक जगह रखा हुआ है वह ले लो। इस प्रकार उन्होंने अपने माल की कुरबानी कर के संपत्ति को त्याग करके अपने बच्चों को बचाया, और स्वयं भी शांति से मदीने पहुंचे। सुहैब जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि कैसे वह सारा माल देकर जान और ईमान बचाकर यहाँ आ गए हैं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम ने घाटे का सौदा नहीं किया। यह एक अच्छा सौदा है।

(अत्तबकातुल कुबरा ले-इब्न साद, जिल्द 3, पृष्ठ 121, सुहैब बिन सन्ना मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996ई)

हर सहाबी का अपना अंदाज़ है। एक अवसर पर हज़रत उमर रज़ि ने हज़रत सुहैब से कहा कि आप अक्सर लोगों को खाना आदि खिलाते हो मुझे डर है कि इस में सीमा से अधिक खर्च न होता हो। हज़रत सुहैब ने कहा कि यह जो खिलाता हूँ यह भी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक इरशाद के अनुसार है। आप ने मुझे नसीहत करते हुए फरमाया कि तुम में से सबसे अच्छे वे लोग हैं जो लोगों को खाना खिलाते हैं और सलाम को रिवाज देते हैं लोगों को अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह कहना एक नेकी और बेहतरीन लोगों की आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह एक निशानी बताई है। कहते हैं यह नसीहत जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मैंने सुनी थी जो मदीना आने पर आप ने मुझे की थी तो मैंने उसे अच्छी तरह पकड़ लिया है और मैं सिवाय वैध हक के धन खर्च नहीं करता सीमा से अधिक नहीं बढ़ता ।

(मस्नद अहमद बिन हंबल, जिल्द 7, पृष्ठ 924 हदीस 24422, मसनद सुहैब बिन सन्नान मुद्रित आलमुल कतब अलइल्मिया बैरूत 1998 ई)

हज़रत सुहैब का स्थान हज़रत उमर रज़ि की नज़र में भी बहुत बड़ा था। इसलिए हज़रत उमर रज़ि ने अपना जनाज़ा हज़रत सुहैब से पढ़वाने की वसीयत की थी और फरमाया कि जब तक अगला ख़लीफा का चयन न हो नमाज़ों की इमामत भी यही

करवाते रहे थे।

(असदुल ग़ाबा, जिल्द 3, पृष्ठ 423, उबैदुल्लाह बिन उमर, मुद्रित उत्तरदायी दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई)

हज़रत ओसामा जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्वतंत्र किए गए ग़ुलाम हज़रत ज़ैद के पुत्र थे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें अपने प्यार की सनद दी थी।

(असदुल ग़ाबा, जिल्द 1, पृष्ठ 91, ओसामा बिन ज़ैद, मुद्रित दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनसे इतना प्यार करते थे कि उसामा खुद बताते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत हुसैन और उन्हें दोनों को अपनी जांघों पर बिठा लेते थे और कहते थे, "हे अल्लाह! इन दोनों से मुहब्बत कर मैं भी इन से मुहब्बत करता हूं ।

(अलमुअजम अलकबीर अत्तबिरानी, जिल्द 3, पृष्ठ 47 हदीस 2642, मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 2002 ई)

लेकिन जहां प्रशिक्षण और धर्म की बात है वहाँ केवल अल्लाह तआला के आदेश हैं। तब वह व्यक्तिगत प्यार समाप्त हो जाता है। हज़रत उसामा आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में छोटी उम्र के थे बल्कि मृत्यु के समय भी उनकी उम्र अठारह साल की थी। लेकिन उन्हें कुछ लड़ाइयों में शामिल होने का अवसर मिला। एक घटना तब हुई जब युद्ध में एक काफिर उसामा के पास आया तो उसने तुरंत कलिमा पढ़ दिया। लेकिन आपने उसे मार डाला, भले ही वह इस कलमा को मौत के डर से पढ़ रहा था। हज़रत उसामा फरमाते हैं कि मैंने इस घटना को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में वर्णन किया तो आपने फ़रमाया कि तुम ने उस व्यक्ति के कलमा पढ़ने के बाद भी उसे मार दिया? मैंने कहा था कि वह सिर्फ बचने के लिए कलिमा पढ़ रहा था। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा, " क्या तुम ने उसका दिल चीर कर देख लिया था?" और फिर कहा, कि तुम ने उसे कलिमा शहादत पढ़ने के बावजूद मार डाला?" उसामा का कहना है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस वाक्यांश को बार-बार दोहराया है कि मैंने चाहा कि काश आज से पहले मैं मुसलमान ही न हुआ होता। उसामा का कहना है कि मैंने यह वादा किया है कि मैं किसी को कभी किसी आदमी को कत्ल नहीं मारूँगा जो ला इलाहा इल्लल्लाहा पढ़ेगा ।

(सही अल-बुख़ारी, हदीस 4269) (असदुल ग़ाबा, जिल्द 1, पृष्ठ 91 से 92, ओसामा बिन ज़ैद, मुद्रित दारुल फिक्र बैरूत 2003ई)

काश कि ये बातें आज के मुसलमानों को भी समझ आ जाएं। वे इस्लाम के नाम पर ग़ैर-मुसलमानों पर जो ज़ुल्म कर रहे हैं वे कर ही रहे हैं, लेकिन मुसलमान मुसलमानों को ख़ुद कत्ल कर रहा है। अब शाम का युद्ध है इस के बारे में कहा जाता है कि पिछले कुछ वर्षों से जब से यह शुरु हुई है लाखों लोग वहां कत्ल कर दिए गए हैं। मुसलमानों ने मुसलमानों को मार दिया जो कलमा पढ़ने वाले वही दूसरों को कत्ल कर रहे हैं या उनकी हत्या कर रहे हैं। यमन में कलमा पढ़ने वालों को मारा जा रहा है दूसरे ज़ुल्म किए जा रहे हैं। दमन किया जा रहा है। अल्लाह तआला उन मुसलमानों को भी बुद्धि दे कि सहाबा की मुहब्बत और रसूल की मुहब्बत के सिर्फ नारे न लगाएँ बल्कि उन के कर्म के अनुसार कार्य करने वाले भी हों। लेकिन तथ्य यह है कि वे इस्लाम के नाम पर अपनी अहंकारों को पूरा कर रहे हैं। इन को इस्लाम का , इस्लाम की वर्णमाला का "क" "ख" भी नहीं जानते, अपनी श्रेष्ठता साबित करना उनकी कोशिश है अल्लाह तआला का नाम मुंह पर है, लेकिन दिल में केवल और केवल उनकी ही ज़ात है। दुनिया में, इस ज़माना में अल्लाह तआला ने वास्तविक तक्वा पैदा करने का लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को भेजा है। अत: इन मुसलमानों की हालत देख कर कि उनकी तो इन का सुधार नहीं हो सकता जब तक यह स्वीकार न करें। हमें धन्यवाद करना चाहिए और आभार की भावनाओं से बढ़ना चाहिए कि हमें अल्लाह तआला ने तौफ़ीक़ दी कि इस मार्गदर्शक को माना जिसे अल्लाह तआला ने इस ज़माना में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सच्चा ग़ुलाम बना कर भेजा। आपने हमें सहाबा के स्थान के बारे में बताया और उन का पालन करने की भी सलाह दी। हमें बताया कि सहाबा के नमूने किस प्रकार के हैं। तुम्हें उन्हें आदर्श के रूप में समझना चाहिए और उनका अनुसरण करने का प्रयास करना चाहिए। अत: यही एक माध्यम है कि हम ख़ुद अगर अपने सामने रखे और आप की बातों को समझने और उन पर अनुकरण करनें की कोशिश करें तो वास्तविक मुसलमान बन सकते हैं।

आप एक जगह फरमाते हैं कि "मूल बात यह है कि जब तक मनुष्य अपनी इच्छाओं और स्वार्थों से अलग होकर ख़ुदा तआला के सम्मुख नहीं आता है वह कुछ प्राप्त नहीं कर सकता बल्कि अपना नुकसान करता है। लेकिन जब वे सभी नफ्सानी इच्छाओं और स्वार्थों से अलग हो जाए और खाली हाथ और साफ दिल लेकर ख़ुदा तआला के सम्मुख जाए तो ख़ुदा तआला उसे देता है और ख़ुदा तआला उसकी मदद करता है। लेकिन शर्त यही है कि मनुष्य को मरने के लिए तैयार होना चाहिए और उस के रास्ते में विनम्र बनना और मृत्यु को याद करने वाला बनना चाहिए।"

फिर आप फरमाते हैं।

" देखो, दुनिया एक फानी चीज़ है, लेकिन इसका आन्नद भी उसी को मिलता हैं जो इसे ख़ुदा तआला के लिए छोड़ते हैं। यही कारण है कि जो व्यक्ति ख़ुदा तआला का अंतरंग होता है।" (अब सहाबा की घटनाओं में हमने देखा कि जब ख़ुदा तआला के लिए छोड़ा तो ख़ुदा तआला ने बहुत सम्मानित किया लेकिन फिर भी उन्हें अपने प्रदर्शन की चिंता है। इस नवाज़े जाने के बावजूद अपनी अख़रत की चिंता है मानो कि पूरी तरह से ख़ुदा तआला के हो गए थे।) आप फरमाते हैं कि " जो व्यक्ति ख़ुदा तआला का अंतरंग होता है ख़ुदा तआला दुनिया में इसके लिए स्वीकृति फैला देता है। यह स्वीकृति है जिसके लिए दुनिया वाला हज़ारों कोशिशें करता है कि किसी प्रकार ख़िताब मिली या किसी इज़्ज़त के स्थान पर या दरबार में कुर्सी मिले या और कुर्सी वालों में नाम लिखा जाए। अत: सारे धार्मिक उद्देश्य उसी को दिए जाते हैं, और हर हृदय में उस का सम्मान और महानता तथा स्वीकृति डाली जाती है जो सबकुछ छोड़ने और ख़ुदा तआला के लिए खोने के लिए तैयार हैं। न केवल वे छोड़ने के लिए तैयार हैं बल्कि छोड़ देते हैं अत: यह कि ख़ुदा तआला के लिए सब कुछ खोने वालों को सब कुछ दिया जाता है और वह नहीं मरते हैं जब तक वह इस से बहुत अधिक न पा लें जो उन्होंने ख़ुदा तआला की राह में न दिया। ख़ुदा तआला किसी का कर्ज़ा अपने ज़िम्मा नहीं रखता है पर अफसोस है कि इन बातों को मानने वाले और इन की वास्तविकता के बारे में जानने वाले बहुत ही कम लोग हैं। "

(मल्फूज़ात जिल्द 5, पृष्ठ 398 से 399, संस्करण 1985 मुद्रित यू. के)

अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि हम आपकी बातों पर अमल करते हुए अल्लाह तआला और उसके रसूल का वास्तविक पालन करने वाले और आदेश का पालन करने वाले हो जाएं।

नमाज़ के बाद एक नमाज़ जनाज़ा हाज़िर पढ़ाऊंगा जो आदरणीया अमतुल मजीद अहमद साहिबा का है जो चौधरी नासिर अहमद साहब उप अमीर यूके और केंद्रीय संपत्ति विभाग के प्रभारी भी हैं, की पत्नी थीं। 9 जनवरी 2018 ई को उन की मृत्यु हो गई है। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। आप हज़रत मौलवी अबुदुल्लाह सनौरी साहिब, सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पड़पोती थीं, शादी के बाद, 1978 ई से फजल मस्जिद के पास निवास था। नमाज़ तथा रोज़ों की पाबन्द थीं। चन्दों में नियमित। बहुत सहानुभूति, मैत्रीपूर्ण, मेहमान नवाज़, नेक और ईमानदार महिला थीं। हर किसी के दु:ख दर्द में शामिल होती थीं। खिलाफत के साथ बहुत अधिक संबंध था। अपने बच्चों को हमेशा इस रिश्ते को बनाए रखने की नसीहत करती थीं। नमाज़ की पाबन्दी की नसीहत करती थीं। बच्चों को अच्छी तरबियत करने की कोशिश करती थीं। इस के साथ ही मुहल्ले के बच्चों को भी कुरआन करीम पढ़ाने के नसीहत करती थीं। लजना यू.के में खिदमते ख़लक और ज़ियाफत के विभाग के अतिरिक्त जलसा सालना यूके में नाज़मा मेहमान नवाज़ यू. के रूप में सेवा की तौफीक़ पाई। पीछे रहने वालों में इन के पति नसीर अहमद साहिब और चार बेटियां हैं। वर्तमान सदर महोदया लजना यूके और पिछली श्माइलह नागी साहिबा जोहैं उन दोनों ने यह लिखा है कि बहुत प्यार करने वाली महिला थीं और उनकी निस्वार्थ प्रेम हर मिलने वाला महसूस करता था। जलसा पर लंबे समय से नाज़िमा मेहमान नवाज़ी का काम संभाला। यह सेवा महान ईमानदारी और कड़ी मेहनत के साथ करती थीं। सचिव ज़ियाफत के रूप में भी काम करने के की तौफ़ीक़ पाई और बड़ी विनम्रता से काम किया।

अल्लाह तआला मरहूमा के स्तर ऊंचा करे और उन की नेकियां उन की बेटियों में भी जारी फरमाए। जैसा कि मैंने कहा, नमाज़ के बाद नमाज़ जनाज़ा हाज़िर पढ़ाउंगा। लोग यहीं सफें सीधी कर लें।

☆ ☆ ☆

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अगस्त 2017 ई. (भाग -9)

☆ नई बैअत करने वालों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाकात

☆ मैंने इमाम जमाअत अहमदिया को पहली बार जब क़रीब से देखा तो वह पल मेरे लिए एक आध्यात्मिक अनुभव था जिस की स्थिति तो मुझे आजीवन याद रहेगी लेकिन इस को ब्यान करने लगूँ तो शब्द और भावनाएं मेरा साथ नहीं देते।

☆ इस वास्तव में बहुत ही शानदार और अच्छे शांतिपूर्ण मुसलमान समुदाय के जलसा में शामिल होने को मैं कभी भी नहीं भूल सकती। केवल आवश्यकता इस बात की है कि अधिक से अधिक लोगों तक जमाअत अहमदिया की शान्ति की शिक्षांएं पहुंचें।

☆ बैअत करने के बाद मेहमानों की प्रतिक्रियाएं

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

जलसा में शामिल होने वाले मेहमान और नई बैअत करने वालों की प्रतिक्रयाएं

* लाटोया से कुर्तबा विश्वविद्यालय की प्रोफेसर लवली डियाज़ साहिबा ने जलसा को लेकर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, मैं जीवन में पहली बार मुसलमानों के इतने बड़े जलसे में शामिल हुई हैं। मैंने इमाम जमाअत अहमदिया को पहली बार जब क़रीब से देखा तो वह पल मेरे लिए एक आध्यात्मिक अनुभव था जिस की स्थिति तो मुझे आजीवन याद रहेगी लेकिन इस को ब्यान करने लगूँ तो शब्द और भावनाएं मेरा साथ नहीं देते। मेरा विश्वास है कि यह जमाअत और इस जमाअत के ख़लीफा अन्य मुसलमानों से पूरी तरह से अलग हैं और मैं इस अन्तर को अपनी रूह में महसूस कर सकती हूं।

* जलसा में एक 13 वर्षीय लड़का अपनी मां, भाई, पिता और उसकी मां के एक मित्र के साथ शामिल हुआ वह कहते हैं: "मैं जलसा में अकेला जाना चाहता था, लेकिन मेरी माँ ने मेरे कम आयु के कारण मुझे अकेला भेजने से मना कर दिया। क्योंकि वह जलसा और जमाअत के बारे में कुछ नहीं जानती थी फिर हमारे साथ जमाअत अहमदिया के एक अरब अहमदी ने संपर्क किया और मेरी माँ से बात की और उन्हें संतुष्टि दी और जलसा और जमाअत के बारे बताया। मैंने जलसा में बहुत कुछ सीखा। नैतिकता, सत्य, अहमदियों की एकता। .... मैंने कोई ग़लत बात नहीं देखी और मैंने अरबों के इजतिमा में अहमदियों की अपने ख़लीफा से प्यार को देखा और जब ख़लीफा अहमदियों के सामने से गुज़रते हैं तो कुछ ख़ुशी की वजह से रोना शुरू हो जाते थे। उन की अपने ख़लीफा से मुहब्बत को मैंने देखा। उसकी मां कहती हैं कि: इंशा अल्लाह तआला मैं निश्चित रूप से अगले साल भी आऊंगी। हमारी सेवा बहुत अच्छी तरह से की गई है कभी-कभी जब शादियों या पार्टियों में जिस में केवल कुछ सौ लोग शामिल होते हैं तो वहाँ के बाथरूम और पार्टियों की जगह बहुत गन्दी होती है लेकिन जलसा में इस कदर लोगों की संख्या के बावजूद हम ने सब कुछ बाथरूम, खाद्य टेबल, यहाँ जब तक आंगन स्थायी साफ पाया। जहाँ तक अहमदी पुरुषों और महिलाओं की बात है मैंने उनमें सच्चाई और मानवता पाई है। विशेष रूप से, इस युद्ध के बाद जिस में हम अपने देश में रह रहे थे, इस युद्ध ने हमें सिखा दिया है कि हम अपने अच्छे और बुरे के भेद को जान सकें। मैं आप की आभारी हूं कि आपने हमारे घरों से रवाना होने से लेकर वापस पहुंचने तक हमारा बहुत अधिक ध्यान रखा है।

एक सीरियन मित्र, आदरणीय अकरम अल-दमूनी, साहिब वर्णन करते हैं कि:

मुझे लगभग एक महीने पहले अहमदिया जमाअत का परिचय एक तब्लीग़ अभियान में एक दोस्त ने पेश किया था। वहां मैंने पहली बार जमाअत अहमदिया के बारे में सुना। तब मैं अपने परिवार के साथ जलसा में आ गया। लोग बहुत अच्छे और मेहमान नवाज़ थे जमाअत के धार्मिक विश्वासों के बारे में प्यार और मुहब्बत और दया के साथ बात करते थे। एक बात मैं जलसा में चमत्कार विचार करता हूं वह यह है कि इतनी बड़ी संख्या होने के बावजूद तीनों दिन लड़ाई के बारे में कोई बात नहीं सुनी। यहां तक कि हज में भी कभी-कभी लोग एक दूसरे से लड़ते हैं लेकिन यहां मैंने किसी को एक-दूसरे के ख़िलाफ ज़ोर से बात करते हुए नहीं देखा है। एक और चीज जिसे मैं एक चमत्कार के रूप में समझता हूं वह है कि अहमदी मेहमान औरतों की तरफ आतिथ्य और आदर से देखते हैं। यहां तक कि मेरी पत्नी ने मुझे यह भी बताया कि मुझे गंदा देखने वाला कोई नहीं मिल सकता है जब ख़लीफा अरब से मिले, तो मैंने उनसे दुआ करना चाहता था कि मेरा भाई शाम में गायब हो। क्योंकि मुझे विश्वास है कि ख़लीफ़ा एक नेक व्यक्ति है और उसकी दुआ अल्लाह तआला के लिए स्वीकार्य होती है।

* एक सीरियाई महिला रहाफ अल यूसुफ ने वर्णन करती हैं कि जमाअत बहुत अच्छी थी। मुझे फेसबुक पर जमाअत का परिचय मिला फिर मैंने जलसा सालाना में आने का इरादा किया ताकि मैं जमाअत के बारे में अधिक जान सकूं। मैंने भाषण सुने और कुछ सवाल भी पूछे, जिन में से कुछ इस तथ्य पर आधारित थे, और मुझे कुछ पर अधिक शोध की आवश्यकता है। आपके लोग वास्तव में सच्चे हैं और आपके पास वास्तविक तक्वा और ईमान है मुझे आपके लोगों में प्यार और शांति मिली और हमें बहुत प्यार और सम्मान मिला।

*एक अरब नई बैअत करने वाले नूरुद्दीन अलजुम्अ: वर्णन करती हैं कि

मैं कुछ समय पहले जामिया अहमदिया जर्मनी में अरबों की एक मुलाकात के बाद बैअत की। मेरा यह पहला जलसा था। मैं इतनी बड़ी संख्या की उम्मीद नहीं कर रहा था। इस चीज़ ने मुझे अंदर से बदल दिया है। मेरे लिए बहुत खुश करने वाला आश्चर्य तब हुआ जब मुझे पता चला कि बैअत के समय में सबसे आगे बैठूँगा और मुझे विश्वास ही नहीं आ रहा था कि मेरा हाथ अमीरुल मोमिनीन मुबारक हाथ में होगा। जब अमीरुल मोमेनीन ने हॉल में प्रवेश किया तो वहां मौजूद लोगों ने नारे लगाने शुरु कर दिए तो मैं डरने लगा और भय अनुभव करने लगा। लेकिन जब अमीरुल मोमिनीन वहाँ पहुँच गए तो मेरा डर जाता रहा .... जलसा के अंत में अब मैं कह सकता हूँ कि जीवन में मैंने पहली बार सच्चे को इस्लाम देखा और नमाज़ की पाबन्दी पहले से अधिक करने लगा हूं और अपने अंदर बहुत बड़ा परिवर्तन पाता हूँ।

* एक सीरियन युवक का नाम इब्राहिम अलख़लफ वर्णन करते हैं:

जलसा में प्रत्येक चीज़ बहुत प्यारी था। मानो हम किसी और दुनिया में ही थे जब अमीरुल मोमेनीन ने अरबों से मुलाकात की, अल्लाह तआला ने मुझे अमीरूल मोमिनीन के मुबारक हाथों को चूमने का अवसर मिला। यह मेरे लिए एक बहुत बड़ी बात थी जलसा के बाद, अमीरुल मोमिनन ने नई बैअत करने वालों से मिले और मैं वहां गया। मेरे लिए सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि मैं अमीरुल मोमिनीन के साथ हूं। केवल एक चीज़ जिस का जलसा के दौरान मुझे बहुत दु:ख था वह यह कि मेरी पत्नी मेरे साथ नहीं थी वह भी हुज़ूर के हाथ पर बैअत करती। उस की भी जलसा में आने की प्रबल इच्छा थी लेकिन गर्भवती होने के कारण यात्रा करना मुश्किल था। अब मुझे लगता है कि मैं दुनिया में भाग्यशाली व्यक्ति हूं। हम ने तीन दिन तक जमाअत अहमदिया के रूहानी दस्तर ख़वान से रूहानी भोजन खाया। अल्हम्दो लिल्लाह। धन्यवाद।

* एक और सीरियन मित्र मुहम्मद अल-अली का वर्णन करते हैं:

मैं दूसरी बार जलसा में शामिल हुआ हूं। इस वर्ष जलसा की व्यवस्था बहुत अधिक संगठित थी। मुबल्लिग़ों और काम करने वाले पहले से अधिक चुस्त दिखे यहाँ तक कि सुबह होटल से लेकर जलसा गाह तक और शाम को जलसा गाह से होटल जाने तक अहमदी बस में मेहमानों के सवालों के जवाब देते रहे और जमाअत के विश्वासों को बताते रहे। इस साल, सबसे आदरणीय और अनोखी चीज़ अरबियों और ख़लीफा के मेहमानों के साथ मुलाकात थी। मैं सभी प्रशासकों और सेवा करने वालों का धन्यवाद करता हूं।

*उसामा अबू मुहम्मद हलबी बताते हैं कि मुलाकात में इतनी अधिक हाज़री के

बावजूद संरचना बहुत अच्छी थी और शांति के लिए सभी एहतियाती तदाबीर की गई थीं और इतनी बड़ी संख्या के बावजूद उनकी सेवा आदर्श थी। हमारे अहमदी भाइयों ने हमारे खाने में और मेहमानी में बहुत सुन्दर रूप से हमारी सेवा की। यह बात स्पष्ट है कि उनके सभी शब्दों और कार्यों में, वह सच्चाई देखने में आई है कि हमने कई इस्लामी संप्रदायों में नहीं पाते हैं। मैं अहमदी तो नहीं, लेकिन आप सभी लोगों की प्रशंसा के बिना नहीं रह सकता।

* बेल्जियम से अतकुया साहिबा, जनि का सम्बन्ध मोरक्को से है जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हुईं। एक साल की तब्लीग़ के बाद, अल्लाह तआला के फज़ल से, इस साल जलसा सालाना जर्मनी में हुज़ूर अनवर की बैअत करके जमाअत में शामिल हुई हैं। महोदया अपनी प्रतिक्रियाओं का वर्णन करते हुए कहती हैं कि कि हुज़ूर अनवर का ख़िताब बहुत ईमान वर्धक था। हुज़ूर अनवर की व्याख्याओं और निर्देशों ने मेरे अन्दर परिवर्तन कर दिया। मेरी सारी परेशानियां और निराशा जाता रहा और मैंने अपने अन्दर एक नया परिवर्तन महसूस किया, और मैंने अहमदियत को स्वीकार करने की तौफीक़ पाई।

* बेल्जियम से एक दोस्त आदरणीय यूसुफ ग़नी साहिब ने वर्णन किया:

जलसा सालाना जर्मनी में शामिल होना मेरे लिए बहुत अनोखा अनुभव था क्योंकि इस जलसा में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ स्वंय मौजूद थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ और अन्य वक्ताओं के भाषण भी महान थे। मेरे बच्चे भी मेरे साथ आए थे। बच्चे भी इस जलसा से बहुत अधिक लाभांवित हुए। जब हम जलसा के बाद वापस जाने लगे, तो बच्चे पूछने लगे कि क्या हम यहां नहीं रह सकते। यह अनुष्ठान की विशेषता है कि जो व्यक्ति इसमें शामिल होकर दिल से ख़ुश होता है कि यह ख़ुशी के दिन कभी समाप्त न हों जमाअत के सभी लोग बहुत अच्छा व्यवहार कर रहे थे जो कहीं भी नहीं देखने को नहीं मिलता।

* फ्रांस में रहने वाले आइवरी कोस्ट के एक अहमदी जमानदे आदमा जिन के पिता अहमदी परन्तु इन का सम्पर्क जमाअत के साथ टूट गया था, वह भी जलसा में शामिल हुए थे। अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखते हैं:

जर्मनी के जलसा के तीन दिन, जो मैंने महसूस किया यह अविश्वसनीय है। मानो कि मुझे एक नया जीवन मिल गया है। मैं अपने असली परिवार से मिला हूँ। मुझे आध्यात्मिक विरासत का एहसास हुआ जो मेरे पिता मेरे लिए छोड़ी थी जब मैंने अपने भाइयों से कहा, वे भी ख़ुश थे और मेरे समारोहों की तस्वीरें देख रहे थे। जमाअत अहमदिया से दोबारा सम्पर्क होना पर मेरी आंखों में धन्यवाद के आँसू हैं।

* अलजज़ायर के एक मेहमान ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा:

आपकी बहतरीन मेहमान नवाज़ी के लिए बहुत आभारी हूं। जमाअत अहमदिया के घर की ज़यारत का अनुभव बहुत हसीन था। आप सभी ने इस जलसा को सफल बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। अल्लाह तआला इस दिन जब न तो औलाद और न ही संतान किसी भी काम में आती हैं, न ही किसी का धन है, सिवाय इसके कि जो ख़ुदा तआला के सामने नेक दिल लेकर हाज़िर हुआ हो, नेकियां आप के पलड़े में डाले। जमाअत अहमदिया के ख़लीफ़ा के साथ मेरी मुलाकात बहुत बढ़िया थी। इन में, मैंने एक आध्यात्मिक नेता देखा जो मुर्शीद, मुर्बी, हमदर्द और मानव मूल्यों और शांति से प्यार करने वाला है।

*पूर्वी जर्मनी के प्रांतीय डेमोक्रेटिक ग्रीन पार्टी के सदस्य ने आसटरोडरव बाइनिश साहिबा ने अपनी प्रतिक्रिया को व्यक्त करते हुए कहा कि:

"सब से पहले तो मैं इस जलसा की दावत पर आप लोगों का धन्यवाद करती हूं। जब मैं इस जलसा में शामिल हुई जहां लोगों की इतनी बड़ी संख्या थी, मुझे लगा कि मैं एक ईसाइयों के किसी इज्तिमा में हूं, परन्तु यह एक मुस्लिम जलसा था। वह भी ऐसे मुसलमान जिन से मुझे सम्मान, भाईचारा की भावनाओं को देखने को मिला। सब से अधिक मेरे दिल पर इस बात का प्रभाव हुआ कि जलसा में विभिन्न जातियों के लोग शामिल थे और वे एक-दूसरे के साथ प्यार से व्यवहार कर रहे थे। मैं अगले साल इस जलसा में शामिल होना चाहूंगी और यह सुनिश्चित करूंगी कि अधिक से अधिक समय जलसा में गुज़ारूं जलसा के विभिन्न प्रोग्रामों से लाभान्वित हो सकूं। इमाम जमाअत अहमदिया का भाषण भी सुनने का अवसर मिला। उनकी रौशन ख़याली, फिरासत (दूरदर्शिता) और दूरबीनी ने मेरे दिल को जीत लिया है एक बात जिस का मुझ पर सब से अधिक प्रभाव था वह एक ख़ुदा तआला की धारणा है, जो मुसलमानों, ईसाइयों और यहूदियों और सारे ब्रह्मांड का ख़ुदा है, और फिर यह कि इंसान दुनिया में जिस मर्ज़ी रंग तथा नस्ल का हो, लेकिन सभी इंसान समान हैं और सभी इंसानों के अधिकार भी बराबर हैं। उन्होंने जिस तरह से आतंकवाद और उग्रवाद का उल्लेख किया,इस से मेरे दिल में एक शान्ति पैदा हुई है। इस वास्तव में बहुत ही शानदार और अच्छे शांतिपूर्ण मुसलमान समुदाय के जलसा में शामिल होने को मैं कभी भी नहीं भूल सकती। केवल आवश्यकता इस बात की है कि अधिक से अधिक लोगों तक जमाअत अहमदिया की शान्ति की शिक्षांएं पहुंचें और इस संबंध में, मैं हर संभव प्रयास करूँगी।

* ऑस्ट्रेलिया के नए अहमदी नौजवान अज़ीज़ अबू बक्र रहीमी साहिब भी जलसा में भी शामिल हुए। महोदय को अहमदियत स्वीकार करने के कारण अपने माता-पिता से बहुत विरोध का सामना है। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: "जलसा में भाग लेने से पहले मुझे लगा कि जलसा का एक असाधारण महत्व था, लेकिन अनुष्ठान और आध्यात्मिक लाभ मेरे अनुमान और उम्मीदों से ज्यादा थे।" यदि पहले मुझे पता था कि जलसा बहुत पवित्र और आध्यात्मिक है, तो मैं स्वयं को इसमें शामिल होने के लिए आध्यात्मिक रूप से तैयारी कर ली होती। जो लोग आंतरिक तैयारी के साथ जलसा में शामिल हुए उन्होंने इस से अधिक लाभ उठाया। मुझे अभी लगता है अगले साल सारा साल इस के लिए तैयारी कर के आऊंगा ताकि अगले साल मैं भी जलसा के लिए ख़ुद को तैयार करूंगा। महोदय ने जब पहली बार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला का दर्शन किया तो कहने लगे कि हुज़ूर तो साक्षात नूर हैं आप से निकलने वाली नूर की किरणें साक्षात सूरज की किरणों की तरह अपने अन्दर ताकत रखती हैं। जब आप चल रहे थे, ऐसा लग रहा था कि प्रकाश का एक चक्र है जो कि तेज़ी से अपने माहौल को प्रकाशित कर रहा है। आपकी आंखों में एक बड़ी ताकत है जब आप पास से गुज़रेतो, मुझे लगा कि हुज़ूर अनवर ने मुझे भी देखा। यह क्षण मेरे लिए बहुत मूल्यवान था मैं यह कभी नहीं भूल सकता।

* एक मेहमान Mirko Walter ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा: बावजूद इतनी भीड़ और गर्मी के, लोग एक दूसरे को का सम्मान करते हुए नज़र आए। मैंने कई लोगों के साथ हाथ मिला लिया और उन से परिचय किया। ये लोग जिस तरह से इज़्ज़त से पेश आए हैं इस में कहीं भी बनावट या अतिशयोक्ति नहीं थी, इस में एक सच्चाई नज़र आई । जमाअत अहमदिया के इमामा महिलाओं की तरफ भी गए और वहां महिलाओं को ख़िताब किया और उन महिलाओं को सम्मानित किया जिन्होंने बड़ी सफलता हासिल की थी। उन्होंने कहा कि अगर महिलाएं काम करती हैं, उनके पास अपना पैसा होता है, और यदि मर्द काम करता है, तो उस का फर्ज़ है कि वे सभी की देखभाल करे। महिलाएं अधिक शक्तिशाली हैं, इसलिए उन्हें बच्चों को संभालने की ज़िम्मेदारी है, न कि वे कमज़ोर हैं। तथ्य यह है कि मर्द इतना मुश्किल काम कर ही नहीं सकते फिर, कहीं भी मुझे नहीं लगा कि वह अपनी बात को वर्णन करने के लिए बनावट से काम ले रहे हैं। यहां जमाअत में शामिल होकर और ख़लीफा को देखकर, अब मुझे पता है कि अहमदी अपने ख़लीफा का इतना सम्मान क्यों करते हैं। बेशक वह एक ही व्यक्ति है। एक अच्छा और सम्माननीय इंसान हैं उनकी बातों से ही उन की ख़ूबियां स्पष्ट हो जाती हैंवह अपनी आस्था स्पषट और आसानी से वर्णन करते हैं चाहे कितनी ही मुश्किल बात क्यों न हो। मुझे बहुत पसंद आया कि अहमदी शिक्षा पर बहुत बल देते हैं और जो लोग जमाअत में शामिल होना चाहते हैं, वे कहते हैं कि जमाअत के बारे में पहले अध्ययन करें, और फिर जमाअत में शामिल हों। इसी तरह जब बड़ी संख्या में लोग एक साथ अपने ख़ुदा को पुकारते हैं, तो यह दृश्य बहुत ही सुन्दर और दिल को हिला देने वाला है। इसका बयान संभव नहीं है।

*स्वीज़रलैंड से एक मेहमान जेम्स लंडनर जिनका ईसाई समुदाय The Church of Jesus Christ of Latter Day Saints के साथ संबंध है उन्होंने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ के भाषण सुने तो एक अहमदी दोस्त के पास आए कहने लगे कि मैं आप के ख़लीफा से ऑटोग्राफ लेना चाहता हूं उन से जब पूछा गया कि उन के दिल में आटो ग्राफ लेने का विचार कैसे आया तो उन्होंने कहा कि वास्तव में इस आदमी के अंदर कुछ है। उन्होंने कहा कि वास्तव में उन्होंने जो कहा सच कहा। जब मैं उनका ख़िताब सुन रहा था, तो मुझे लगा कि पवित्र आत्मा की आवाज़ उनके भीतर से आ रही है।

*दो तब्लीग़ किए जाने वाले मेहमान Hrtem-Selutin साहिब और Oner Ozdenir साहिब को जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ की व्यस्तता की सूची बताई गई तो बहुत हैरान हुए और कहने लगे इमाम जमाअत अहमदिया केवल शांति की बातें ही नहीं करते बल्कि व्यावहारिक रूप में

शांति फैलाने वाले हैं उनके भाषण में यह भी स्पष्ट है कि इस्लाम शांति का धर्म है। उनके चेहरे पर बहुत नूर और अमन नज़र आता है।

जब उन्हें जलसा गाह में वकारे अमल का बताया गया तो बहुत हैरान हुए और कहने लगे कि इस भौतिक युग में कौन अपना माल और समय खर्च करता है। यहां, हर एक कार सेवक विनम्रता और अखंडता का एक जीवंत चित्र है। हमने मुसलमानों के कई संप्रदायों को देखा है, लेकिन जमाअत अहमदिया से बेहतर और कोई अच्छा सम्प्रदाय नहीं है। अहमदियत ही असली इस्लाम है।

जलसा सालाना जर्मनी मीडिया कवरेज

अल्लाह तआला के फज़ल से जलसा सालाना जर्मनी की इलेक्ट्रानिक और प्रिंट मीडिया में बड़ी व्यापक कवरेज हुई। जलसा के पहले दिन जुम्अ: की नमाज़ के बाद प्रेस कान्फ्रेंस हुई जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय और स्थानीय इलेक्ट्रानिक और प्रिंट मीडिया के पत्रकार और प्रतिनिधि शामिल हुए।

अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया में इटली, मैसेडोनिया, ऑस्ट्रिया, ब्राज़ील और बेल्जियम के समाचार पत्रों के प्रतिनिधि थे। राष्ट्रीय स्तर पर जर्मनी के 4 टी वी स्टेशन और 3 प्रिंट मीडिया के प्रतिनिधि उपस्थित थे। स्थानीय स्तर एक टीवी, एक रेडियो और 4 प्रिंट मीडिया प्रतिनिधि था।

कुल मिलाकर, जर्मनी में तीन दिवसीय समारोह की कवरेज हुई है। रिपोर्ट के अनुसार 5 टीवी चैनल, 3 रेडियो चैनल और 61 समाचार पत्रों और अन्य प्रिंट मीडिया द्वारा 5 करोड़ 92 लाख 56 हज़ार 513 लोगों तक संदेश पहुंचा। इसके अलावा अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया में आगामी सप्ताह तक जो कवरेज अनुमान है उसके द्वारा उनके viewership के अनुसार 4 करोड़ 13 लाख 12 हज़ार लोगों तक संदेश पहुंचेगा। अतीत के विपरीत इस साल मीडिया ने इस बार केवल जानकारी नहीं दें बल्कि कुछ रिपोर्टर ने जलसा गाह में घूम विभिन्न लोगों से इन्ट्रवियू किए हैं और अमूरे ख़ारिजा विभाग के कार्यकर्ताओं, लजना, पार्किंग, पंजीकरण आदि पर मौजूद आम अहमदियों के भी इन्ट्रवियू किए और उनका उल्लेख किया। लगभग सारे प्रतिनिधि हुज़ूर अनवर के साथ संवाददाता सम्मेलन में मौजूद थे, कम कम से कम 3 घंटे जलसा गाह में मौजूद थे। विभिन्न स्थानों पर जाकर इन्ट्रवियू करते रहे यद्यपि लेख का स्थान सीमित है लेकिन पत्रकारों ने विस्तृत नोटिस लिए । एक पत्रकार ने कई घन्टे की ऑडियो रिकार्डिंग की। उर्दू तकरीर और तिलावत भी रिकार्ड की

* ZDF + T ने ख़बर देते हुए हुज़ूर अनवर के इस वाक्य और इसका अनुवाद प्रस्तुत किया है कि "मैं आप से धार्मिक रीति के अनुसार हाथ तो नहीं मिलाता लेकिन जब भी आप की जरूरत होगी या कोई समस्या आएगा तो आप मुझे अपनी सहायता करने वालों में पहली पंक्ति में पांएगे। " इसी वाक्य विभिन्न अख़बारों जैसे KA-Nachrichten ने भी लिखा। अख़बारों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ का महिलाओं से ख़िताब का भी सारांश दर्ज किया। इसी तरह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ के दूसरे दिन के भाषण में से भी कुछ बातों का उल्लेख किया।

*जर्मनी के Baden-Tv ने इंटरनेट पर जलसा पर नकारात्मक ख़बरों पर नकारात्मक comments लिखने वालों को एक वीडियो टिप्पणी द्वारा बहुत अच्छा जवाब दिया है जिसमें उन्होंने जमाअत के माटो प्रेम सब के लिए नफरत किसी से नहीं के महत्त्व पर ज़ोर दिया है।

* एक और प्रसिद्ध जर्मन अख़बार Tagesspiegel ने एक लम्बा लेख पेश किया। उसने यह भी हुज़ूर अनवर के की तब्लीग़ी मेहमानों के साथ ख़िताब का उल्लेख किया है, साथ ही महिलाओं के हवाले से लिखा कि महिलाओं को वहाँ हिदायत की गई थी कि अनावश्यक रूप से इधर-उधर न घूमें बल्कि पर्दे का ख्याल रखें। अगर कोई महिला चेहरा ढांप नहीं कर सकती, तो उसे मेकअप नहीं करना चाहिए।

* मीडिया की विशाल बहुमत ने जमाअत की शांति का उल्लेख किया। अख़बार Sueddeutsche Zeitung ने लिखा:

मिर्ज़ा मसरूर अहमद ने कुरआन की शांति पर ज़ोर देते हुए कहा कि युद्ध करना कभी भी इस्लाम का लक्ष्य नहीं रहा। समलैंगिकता के संबंध में उन्होंने कहा कि कुरआन ऐसे संबंधों पर प्रतिबंध लगाता है लेकिन समलैंगिकों पर हमला नहीं करना चाहिए वही अन्य अख़बारों और प्रिंट मीडिया द्वारा लिखा गया है।

*एक रिपोर्टर ने बताया मुझे सबसे अच्छी बात यह लगी कि ख़लीफा ने हर सवाल का सीधा और सीधे उत्तर दिया। राजनेताओं की तरह कोई बात नहीं थी। सवाल पर अपना ध्यान रखा।

*** इस्लाम की वेबसाइट पर जलसा कवरेज:**

जलसा की कार्रवाई एम.टी.ए जर्मन स्टूडियो की मदद से लगातार अप लोड की जाती रही। केंद्रीय प्रेस और मीडिया कार्यालय द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति भी अपलोड की गई थी।

* सोशल मीडिया पर जलसा के कवरेज के हवाले से कार्रवाई की गई। जिस में फेसबुक पर 32 पोस्ट प्रकाशित हुईं जो 4 लाख 20 हज़ार लोगों ने देखें और 36 हज़ार लोगों ने इन posts को पसंद किया और उन पर टिप्पणी आदि की। इसी तरह Twitter पर भी सम्मेलन के संदर्भ से 5 लाख 36 हज़ार लोगों ने जलसा के tweets देखे और 5 हज़ार 800 लोगों ने retweet किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने सुबह पांच बजकर तीस मिनट पर तशरीफ़ लाकर नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ के अदा करने के बाद अपने निवास पर वापस पधारे। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने रिपोर्टें देखीं और हिदायतों से नवाज़ा।

हुज़ूर अनवर से मुलाकात

आज कार्यक्रम के अनुसार, विभिन्न देशों से आने वाले विभिन्न दलों के साथ मुलाकातें थीं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला 10 बज कर 55 मिनट में अपने कार्यालय तशरीफ लाए और मुलाकातों का प्रोग्राम शुरू हुआ।

स्लोवेनिया

स्लोवेनिया गणराज्य के पहले प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। स्लोवेनिया के एक छह सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हुआ।

एक मेहमान Mr.Gregor Sankovic जो एक पेशेके लिहाज़ से वकील हैं, ने बताया कि जलसा सालाना का कार्यक्रम बहुत अच्छा था। मैं सभी व्यवस्थाओं से बहुत प्रभावित हुआ हूं। महोदय ने कहा कि उन्हें स्लोवेनियाई भाषा में कई ख़िताबों का अनुवाद करने का अवसर मिला है। इस संबंध में, मेरी इच्छा थी कि मैं हुज़ूर अनवर से मिलूं। जलसा में शामिल होने से मेरी इच्छा पूरी हुई। इस मौके पर मुझे कई अहमदी मित्रों से मिलने का अवसर मिला है। पहले मैं केवल कुछ को ही जानता था, लेकिन अब कई अहमदियों को से परिचय है। अहमदी मुसलमान बहुत मेहमान नवाज़ और बहुत प्यार से पेश आने वाले हैं।

स्लोवेनिया के प्रतिनिधिमंडल में एक पत्रकार Urska Zagorc उर्सका ज़ागोरक शामिल थीं महोदया ने हुज़ूर अनवर की के पूछने पर कहा कि वह आर्थिक संकट के संदर्भ में काम कर रही हैं। अपनी टिप्पणियां वर्णन करते हुए कही कि जलसा का प्रबंधन बहुत अच्छा था और यह एक बहुत अच्छा वातावरण था। बहुत से लोग विभिन्न देशों से आए थे, और वे हमेशा हमारे साथ सम्मान से पेश आए। हुज़ूर अनवर से मिलने के बाद, यह कहने लगीं कि मुलाकात इतनी दिलचस्प थी कि वह उठना नहीं चाहता था। मेरा इच्छा है कि मैं लंबे समय तक बैठती और हुज़ूर अनवर से बात करने का अधिक मौका मिल जाता।

अपने विचार व्यक्त करते हुए एक मेहमान बार बारबरा नोवाक साहिबा ने कहा कि जलसा का प्रबंधन 100 प्रतिशत नहीं था, बल्कि पांच सौ प्रतिशत था।

सीरिया से जुड़े एक अतिथि, लेकिन वह स्लोवेनिया में रहते हैं, कहने लगे कि जलसा सालाना का प्रबंधन बहुत अच्छा था। हमारे पास कई नई चीजें सीखने का अवसर है जो हम अपने जीवन का एक हिस्सा बनाने का प्रयास करेंगे और कभी भी नहीं भूलेंगे।

रेड क्रॉस डिपार्टमेंट में कार्यरत वकील Mr. Gregor Sakovic ग्रेगर सकॉविक ने इताअत के बारे में सवाल किया। इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया: मंच के पीछे बैनर पर भी लिखा था कि اَطِيعُوا اللّٰهَ وَاَطِيعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ क़ुरआन करीम कहता है कि अल्लाह और रसूल और अपने में से हुकूमत वोलों की आज्ञाकारिता करो जहाँ तक हुकूमत वालों की आज्ञाकारिता का संबंध अगर कोई शासक, कोई सरकार आपके धर्म में हस्तक्षेप करती है और आपको धार्मिक शिक्षाओं का पालन करने से रोकती है, तो इस मामले में इसका पालन नहीं किया जाता है। हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि पाकिस्तान में हम कलिमा पढ़ते हैं। अस्सलामो अलैकुम कहते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं। इस मामले में हम राष्ट्रीय कानून को स्वीकार नहीं करते हैं। धर्म में हस्तक्षेप का जो कानून है उस पर हम अनुकरण नहीं करेंगे। बाकी जो अन्य कानूनों हैं उन का हम सम्मान करते हैं और जो भी हाकिम है उस का सम्मान करते हैं। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी एक कानून बनाकर नमाज़ों की इबादत से रोका गया था लेकिन

आपने इसे स्वीकार नहीं किया।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: पाकिस्तान नें अस्सलामो अलैकम कहें तो तीन साल की सज़ा हो सकती है कलिमा तय्यबा ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं। कहीं तो तीन साल की सज़ा मिलती है बहुत से अहमदियों ने इस सज़ा को स्वीकार कर लिया और जेलों में चले गए। उन्होंने सज़ा स्वीकार कर ली, लेकिन अपने ईमान से पीछे नहीं हटे।

एक अतिथि महिला कैथोलिक थीं और उसने एक मुस्लिम व्यक्ति से विवाह किया था। हुज़ूर अनवर ने फरमाया: अब, धर्म के मामले में एक दूसरे पर कोई ज़बरदस्ती नहीं करनी कि इन का धर्म धारण करें। धर्म के। मामले में बाधित नहीं करना चाहिए। जो बच्चे पैदा होंगे वे पिता के धर्म पर होंगे। उनका प्रशिक्षण एक पिता की तरह होगा। हुज़ूर अनवर ने कहा: प्राय मामलों में मैंने देखा है कि जब पती पत्नी के अलग-अलग धर्म होते हैं, तो बच्चे पैदा होने के बाद समस्याएं शुरू होती हैं, जब उनकी तरबियत का समय और उम्र शुरू होती है तो मतभेद होते हैं बजाय मतभेदों के यह देखना चाहिए कि जिस धर्म में जो अच्छाई है उसे स्वीकार करना चाहिए। पति अगर देखे कि पत्नी के धर्म नेकी है, तो उसे नेकी स्वीकार करनी चाहिए और पत्नी अगर देखे कि अगर पति के धर्म में नेकी है तो पत्नी उसे स्वीकार करे। लेकिन एक दूसरे को मजबूर नहीं कर सकते।

स्लोवेनिया के प्रतिनिधि मंडल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ उपस्थित से मुलाकात 11 जब कर15 मिन्ट तक जारी रही। अंत में, प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया ।

सिंगापुर

इस के बाद सिंगापुर के देश से आए प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अन्हो से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया । सिंगापुर से दो अदमियों पर आधारित दल जलसा सालाना जर्मनी में शामिल होने के लिए आया था।

* वफद के एक सदस्य ने कहा कि वह पूर्व सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया हैं। जब हुज़ूर अनवर ने सिंगापुर का दौरा किया, तब वह सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया थे और उन्हें हुज़ूर अनवर की गाड़ी चलाने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ था । दोनों सदस्यों ने कहा कि हम पहली बार जलसा सालाना जर्मनी में भाग लिया है और हमें बहुत अच्छा लगा है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने दया करते हुए इन दोनों दोस्तों की फैमलियों और बच्चों आदि के बारे में पूछा। हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि मैं सिंगापुर को पसन्द करता हूं। सिंगापुर के वफद से मुलाकात का यह प्रोग्राम 11 बजकर 20 मिनट तक जारी रहा। अंत में, प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों से अपने प्यारे आक़ा के साथ एक तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

किरगीज़स्तान

इसके बाद कार्यक्रम के अनुसार करगीज़स्तान देश से आने वाले प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का सौभाग्य मिला। करगीज़स्तान से भी दो व्यक्तियों को प्रतिनिधिमंडल आया था। इनमें से एक वहां के सदर जमाअत थे और दूसरे जामिया अहमदिया घाना के छात्र आशेर अली ग़यास बैग साहिब थे।

सदर जमाअत सालमत बेक कुशताबायफ साहिब ने बताया कि उन्होंने वर्ष 2006 ई में अहमदियत को स्वीकार किया था और वह इस समय वहां जमाअत के अध्यक्ष थे। उन्होंने जमाअत के पंजीकरण के संबंध में हुज़ूर अनवर की सेवा में दुआ के लिए कहा। हुज़ूर अनवर ने कहा: "आप कोशिश करते रहें और बार बार अपलाई करते रहें। किसी समय अच्छा नेतृत्व होगा तो स्वीकार हो जाएगा। अपने पब्लिक रिलेशन बढ़ाएं और अपने लिंक आदि के कार्यक्रमों के लिए अगर बजट नहीं है तो बजट बनाएँ। सदर साहिब ने अर्ज़ किया कि करगीज़स्तान जमाअत हुज़ूर अनवर की सेवा में सलाम है। उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह " फरमाया "मेरा सलाम भी अपनी जमाअत तक पहुंचाऐं।"

हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए आशेर अली ग़यास साहिब छात्र जामिया अहमदिया घाना से भी बातचीत की और कहा कि आप ने बड़ी अच्छी उर्दू भाषा सीखी है यहां आपका यह पहला जलसा है क्या यह घाना के जलसा की तरह नहीं है? वहां तो महिलाएं और पुरुष अपने स्वयं के भोजन पका रहे होते हैं लेकिन यहां दूसरी प्रणाली है लंगर ख़ाना में केवल पुरुष भोजन पका रहे होते हैं जब कुछ प्रतिबंध हैं जब कि वहां स्वतंत्रता है और सुविधा का लाभ उठाते हुए विभिन्न तरीकों पर लंगर की व्यवस्था है।

हुज़ूर अनवर ने करूणा से जामिया घाना में शिक्षा पाने वाले रूसी देशों के छात्रों के भोजन के प्रबंधन के बारे में पूछा और कहा इस विषय में मैंने निर्देश दिए थे और अब प्रबंधन पहले से बेहतर है और अपने स्वभाव और ज़रूरत के अनुसार भोजन उपलब्ध है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: "अल्लाह तआला करे कि वहां के हालात पहले से बेहतर हों तो मैं आप के देश की यात्रा करूं। किरगिस्तान के वफद के साथ यह मुलाकात साढ़े ग्यारह बजे तक जारी रही। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ने दोनों दोस्तों को करूणा करते हुए अलैसल्लाह की अंगूठी और कलम प्रदान किए।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के मर्दाना हॉल में आए जहां अल्बानिया देश से आने वाले प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात की सआदत हासिल की। इस साल अल्बानिया से 48 लोगों का प्रतिनिधिमंडल जलसा में शामिल हुआ जिसमें 19 अहमदी और 29 ग़ैर अहमदी अलबानीयन थे। ये लोग बस के द्वार् 43 घंटों का सफर करे पहुंचे थे इनमें सरकार की तरफ से भी दो प्रतिनिधि आए थे जिनमें श्रीमती लोरीटाकोनोमी, अध्यक्ष आफ स्टेट कमेटी ऑन cults और श्री सरवैट गोरा, जो इसी संस्थान के बोर्ड के सदस्य हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ बेनस्रेहिल ने सभी मित्रों से हाल पूछा और उसके बाद कमेटी ऑन कलटस की अध्यक्ष ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर बताया कि अल्बानिया में यह संस्था सरकार और धार्मिक संस्थाओं के बीच समन्वयक का काम करती है और देश मैं धार्मिक सहिष्णुता सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाती है। महोदया ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह से सवाल किया कि धार्मिक सहिष्णुता स्थापित करने में अहमदी जमाअत क्या काम कर रही है?

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यदि आप मेरा कोई व्याख्यान सुनें जो मैं विभिन्न सेमिनारों में करता हूँ तो इस सवाल का जवाब मिल जाएगा। हम धार्मिक शांति के बारे में आश्वस्त हैं सभी धर्मों को एक साथ बुला कर अपने विचारों का आदान-प्रदान करना चाहिए। हम सम्मेलनों को आयोजित करते हैं जिनमें विभिन्न धर्मों के विद्वानों को आमंत्रित करते हैं, उनका स्वागत करते हैं और उन्हें इस्लाम की शांतिप्रिय शिक्षा से अवगत करते हैं और यह हमारी कोई आज की कोशिश नहीं बल्कि संस्थापक जमाअत अहमदिया हज़रत मसीह मौऊद नियमित ने एक पुस्तक जो सर्व धर्म सम्मेलन की एक संगोष्ठी के अवसर पर एक व्याख्यान था बाद में आप का यह ख़िताब "इस्लामी उसूल की दर्शन भूमि " के नामक से किताब में प्रकाशित हुआ था। आप इस पुस्तक को हमारे केंद्र से प्राप्त कर सकते हैं। हम मानवीय मूल्यों से आश्वस्त हैं और इस्लाम के माध्यम से उन्हें फैलाते हैं। यदि मानवीय मूल्य न हों, तो धर्म की सही रंग में पाबन्दी नहीं की जा सकती।

इसके बाद श्री कोनोमी साहिबा ने, सवाल किया कि आज कल दुनिया आतंकवाद फैल रहा है, खासकर युवा वर्ग इसकी ओर बह रहा है। आप की जमाअत इस समस्या को सुलझाने के लिए दुआ के इलावा व्यावहारिक रूप से क्या काम करते हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: हम कोशिश करते हैं कि इस्लाम का असली संदेश ग़ैर अहमदी मुसलमानों तक भी पहुँचाएँ। हम ग़ैर-मुस्लिम विद्वानों को हमारे शांति सम्मेलनों में भी आमंत्रित करते हैं। हम किसी को ज़बरदस्ती नहीं मनवा सकते। न ही हमारे पास कोई हुकूमत है कि हम हुकूमत के स्तर पर अपना नमूना प्रस्तुत कर सकें लेकिन हमारी क्षमताओं और संसाधनों के अनुसार, हम इस समस्या के वास्तविक तथ्यों को मुसलमानों को समझाने की कोशिश करते हैं। इसके अतिरिक्त, हम अपने समुदाय में सही इस्लामी शिक्षा लागू करने की कोशिश करते हैं। इसलिए, आप देख सकते हैं कि कोई भी अहमदी युवा उग्रवाद नहीं करता है।

इस के बाद महोदया ने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा कि मैंने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की लजना की मार्की में वर्णन की गई तकरीर के भी सुना और अन्तिम ख़िताब को भी।। मैं विशेष रूप से हुज़ूर अनवर के समापन ख़िताब से से प्रभावित हुई। आज की दुनिया में, हर जगह युद्ध और धमकी के बारे में बात की जा रही है और इस तरह के एक मजबूत और स्थिर तरीके से शांति को फैलाना बहुत ही प्रशंसा की बात है। मुझे हुज़ूर अनवर की यह बात बहुत पसंद आई कि एक महिला को ससबसे अधिक अपने बच्चों को प्रशिक्षण देने के बारे में

चिंतित होना चाहिए।

Rexhep Doka साहिब अल्बानिया में ग़ैर-अहमदी मस्जिद के इमाम हैं महोदय ने मुलाकात के दौरान अपनी प्रतिक्रिया को वर्णन करते हुए कहा कि 41,000 हज़ार से अधिक लोग तीन दिन तक जमा रहे और किसी प्रकार की कोई शिकायत नहीं हुई? यह नि:सन्देह एक बहुत बड़ी बात है। हुज़ूर अनवर ने उन से पूछा कि क्या आप की मस्जिद में इस प्रकार के जलसे होते हैं? महोदय ने कहा कि इतनी बड़ी संख्या में तो नहीं होते और न नियमित तरीके से होते हैं।

पिछले साल अल्बेनिया से आने वाले मेहमान Dalip Gjergji जो पिछले साल भी जर्मनी गए थे। हुज़ूर अनवर ने उनसे पिछले वर्ष और इस साल के अनुष्ठान के बीच अंतर के बारे में पूछा। महोदय ने कहा: दोनों बार वह जलसा से बहुत प्रभावित हुए और हुज़ूर अनवर के भाषणों ने उनके अंदर काफी बदलाव पैदा कर दिया है जिस के कारण महोदय जलसा के अंतिम दिन बैअत कर अहमदियत में शामिल हो गए, जबकि उनके बेटे जो वह मुलाकात में उपस्थित थे, ने पिछले साल की बैअत की। हुज़ूर अनवर ने उन को ईमान और इस्तिकमात के लिए दुआ की।

इसके बाद, Rexhep Doka ने हुज़ूर अनवर से यह सवाल किया कि भविष्यवाणियों में लिखा है कि इमाम महदी आएंगे और कुछ वर्षों के लिए दुनिया में रहेंगे, और इस के बाद कयामत आएगी। लेकिन अगर आप मानते हैं कि वह आ चुका है तो अभी तक क़यामत क्यों नहीं आई? इसके जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कहा: क़यामत कब आएगी इसका सटीक ज्ञान तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी नहीं बताया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी फरमाया कि मैं केवल कुछ लक्षण ही बता सकता हूं। साथ ही अगर इमाम महदी ने कयामत के इतने निकट आना है तो वह क्या काम करेगा? जब वह अल्बानिया आएगा तो वहाँ के लोगों को कहेगा कि मेरे पास ज्यादा समय नहीं है अभी मुझे अफ्रीका के जंगलों में रहने वाले लोगों के पास भी जाना। फिर मसीह मौऊद कहेगा कि मुझे सलीब को तोड़ने भी जाना है और फिर सूअरों को मारना होगा। अब जर्मनी में इतने सारे सूअरों के फार्म हैं कि उसी में बहुत समय लगेगा। ऐसी तरह से क़यामत के निकट आकर वह क्या काम करेगा? दुनिया की स्थिति देखें जो नैतिकता की दृष्टि से कितनी बिगड़ गी है है इतने कम समय के लिए इमाम महदी क्या काम करेगा? हश्र के दिन, जब अल्लाह तआला लोगों से पूछेगा कि वे क्यों नहीं ईमान लाए थे तो वे कहेंगे हमारे पास इमाम महदी तो आए ही नहीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "इमाम महदी का आगमन कुरआन के सूरह तकवीर में है। इसी तरह, हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी कई संकेत कयामत के बारे में वर्णन फरमाई हैं। इन सब को ज्ञान की रोशनी में पढ़ना टाहिए और समीक्षा की जानी चाहिए जैसे दज्जाल की दज्जाल के गधे की भविष्यवाणी है और सूर्य और चंद्रमा रमजान के महीने में निर्धारित तिथियों में ग्रहण लगने की भविष्यवाणी है जिसका उल्लेख मैंने जलसा में भी किया था और बताया था कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दौर में यह पूरी हुई और इस ख़बर को उस समय के पूर्व और पश्चिम के समाचार पत्रों ने भी प्रकाशित किया गया था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इसी तरह यह भी देखना चाहिए कि इमाम महदी का ज़हूर ऐसे समय में होना था जब दुनिया विकसित कर चुकी होती। ज्ञान फैल चुका होता सीमा समाप्त हो गई है। लोगों में बुद्धि के प्रकाश में फैसला करने की क्षमता अधिक होगी। इमाम महदी की भविष्यवाणियों को शाब्दिक रूप से नहीं लिया जाना चाहिए इसके बजाय, ज्ञान और ज्ञान को इन उपमाओं को पहचानना चाहिए। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय में, जबकि लोगों का ज्ञान इतना व्यापक नहीं था, इन भविष्यवाणियों को उपमा के रंग में वर्णन किया जा सकता था।

उसके बाद "मारलगलैंन बेजा" जो कि एक के तब्लीग़ किए जाने वाले युवा हैं, उन्होंने सवाल किया कि कहा जाता है कि इमाम महदी कयामत से केवल 40 साल पहले आएगा तो दूरदराज़ देशों में बसने वाले लोगों को इस के आगमन का कैसे पता चलेगा सकता है लेकिन आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ लाए और आज हम अल्बानिया में रहने वाले लोगों ने इस को स्वीकार कर लिया।

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मैंने यह तो कहा है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आए 14 सौ साल बीत गए और अभी तक कयामत नहीं आई। यही कारण है कि आप लोगों को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में ज्ञान हो गया। हालांकि आज भी दुनिया में कई दूरदराज़ के इलाकों, अफ्रीका और अन्य महाद्वीपों में भी, जिन तक आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का संदेश अभी नहीं पहुंचा, जिन लोगों को इस्लाम के बारे में कुछ ज्ञान नहीं 14 शताब्दियां बहुत लम्बा समय होता है, जबकि इमाम महदी के बारे में आप कह रहे हैं कि इस के आने के 40 वर्षों के बाद कयामत होगी। इस तरह से उस को इस्लाम के प्रकाशन का कुछ भी समय नहीं मिलेगा। इसी तरह, यह भी समझना चाहिए कि इमाम महदी और मसीह मौऊद दो अलग-अलग आदमी नहीं हैं, बल्कि एक ही आदमी के जो नाम हैं।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने प्रतिनिधिमंडल में मौजूद एक दोस्त फरेट बकसी साहिब से पूछा कि आप पहली बार जलसा में आए हैं? उन्होंने कहा कि वह पहली बार जलसा में शामिल हुआ हैं। साथ ही उन्होंने जलसा सालाना की उच्च व्यवस्था की सराहना करते हुए हुज़ूर अनवर और जमाअत का धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि उनके लिए यह बहुत बड़ा सम्मान है कि वह हुज़ूर अनवर के सामने बैठे हैं। महोदय ने कहा कि मुझे धर्म का अधिक ज्ञान नहीं और मेरे से पहले दोनों ने अतीत के हवाले से सवाल किए हैं मैं जानना चाहता हूं कि भविष्य के बारे में आप क्या कहते हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इमाम महदी और मसीह मौऊद आगमन दरअसल इस्लाम के भविष्य के लिए है, जबकि भौतिक विकास के साथ वास्तविक इस्लाम का संदेश पूरी दुनिया में फैलना था। अब इमाम महदी के माध्यम से, अर्थात् जमाअत अहमदिया के द्वारा, इस्लाम दुनिया के किनारों तक पहुंचेगा। इसलिए दुनिया के दूरदराज़ के क्षेत्रों में लोगों ने इस्लाम को स्वीकार किया, जिसमें ईसाई धर्म और अन्य धर्म भी शामिल हैं।

मुलाकात के अन्त पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने मर्दों को हाथ मिलाने और वफद के सारे दोस्तों को तस्वीर बनाने का शर्फ प्रदान फरमाया।

तस्वीर ख़िंचवाते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने Rexhep Doka साहिब से कहा कि आप एक मस्जिद के इमाम हैं। मस्जिद में आने वालों को विशेष रूप से ध्यान दिलाएं कि लोगों के साथ कैसे अमन के साथ रहना चाहिए। मानवीय मूल्य कैसे स्थापित करने हैं।

वफद की एक और मेम्बर Kadrie Shparthi साहिबा के बार में अल्बानिया के मुबल्लिग़ ने बताया कि उन्हें कैंसर है और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह से दुआ का निवेदन किया। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि "अल्लाह तआला फज़ल फरमाए।"

मुबल्लिग़ ने वफद में शामिल हो कर एक दूसरे बच्चे प्रिय फलो ग्राट के बारे में बताया कि वह बहुत अधिक हकलाता है। हुज़ूर अनवर ने उस बच्चे को दुआ दी।

मुलाकात के दौरान एक बच्ची हाला अहमद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह के पास आई और हुज़ूर के कदमों में बैठना चाहा। हुज़ूर ने करूणा करते हुए उस बच्ची को बैठने की आज्ञा दी। अत: मुलाकात के दौरान यह बच्ची वहीं बैठी रही। यह मुलाकात बारह बज कर दस मिन्ट पर समाप्त हुई। अन्त में वफद के सारे मेम्बरों ने बारी बारी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ तस्वीर बनाई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने दया करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों तथा छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटे बच्चों को चाकलेट प्रदान किया।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 15 February 2018 Issue No. 7

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पृष्ठ 2 का शेष

होकर मैदान कर्बला में गिर पड़े तो एक बदबख़्त व्यक्ति ने आगे बढ़कर सिर शरीर से अलग कर दिया।

यह बलिदान का संबंध अरब के मरुस्थल कर्बला के दश्त खार से ज़मान व मकान का सफर तय करते हुए दौरे आख़रीन में काबुल की सरजमीं पर आ पहुँचा और 20 जून 1901 ई को रहमान ख़ुदा के बन्दे अब्दुर्रहमान काबुली ने राहे ख़ुदा में जान देकर सिलसिला आख़रीन पहले शहीद होने का सम्मान प्राप्त किया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे के साथ ही कादियान की पवित्र बस्ती से ऊंची होने वाली आवाज चारों तरफ फैलती जा रही थी कि इस दौरान अफगानिस्तान के एक बहुत पवित्र और बाकमाल हस्ती हज़रत शहज़ादा अब्दुल लतीफ साहिब ने हज़रत अहमद अलैहिस्सलाम के प्रकट होने के दावा का उल्लेख सुना। इसका उल्लेख शहज़ादा साहिब ने अपने मुरीदों के पास किया। आप के एक विशेष शागर्दि मौलवी अब्दुर रहमान साहिब ने कहा कि मैं कादियान में जाता हूं और पूरी तरह से पता कर के आता हूं।" हज़रत अब्दुर रहमान एक सुन्दर, मध्यम कद के, अपेक्षाकृत पतले शरीर के मालिक और शिक्षित किशोर थे। आप मंगल क़ौम के अहमद ज़ई कबीला के थे। यह युवा अनुमान 1895 के शुरुआती महीनों में कादियान आ पहुंचा। इस के बाद मौलवी साहिब कई महीनों तक कादियान में बने रहे। वापस ख़ोस्त आ गए और हज़रत अब्दुल लतीफ साहिब को सारी परिस्थितियों के बारे में बताया। इस के बाद कादियान आते जाते रहे। हुज़ूर अलैहिस्सालम ने आपका नाम में तीन सौ तेरह सहाबा में शामिल फरमाया। उन दिनों, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने एक रसाला लिखा जिसमें आप ने तलवार के जिहाद को हराम करार दिया। मौलवी साहिब ने काबुल और खोस्त में कई स्थानों पर यह उल्लेख करना शुरू कर दिया है कि इस्लामिक शिक्षा की दृष्टि से तलवार का जिहाद मना है। तब यह ख़बर धीरे-धीरे वाली अफग़ानिस्तान अमीर अब्दुर्रहमान को पहुंच गई और कुछ दुष्टों ने उसे कहा कि यह एक ऐसे व्यक्ति का मुरीद है जो अपने आप को मसीह मौऊद प्रकट करता है और यह उसी की शिक्षा है कि हत्या, मारधाड़ जिहाद नहीं है। दुर्भाग्य पूर्ण अमीर, इस शिक्षा को अपनी वैचारिक विचारधारा के विपरीत विवादास्पद पा कर क्रोधित हो गया और उस के आदेश पर आप को कैद कर दिया गया। जब कैद की ये कष्ट भी आप के कदमों को हिला न सके तो तो अनुमानत: 20 जून 1901 ई को काबुल जेल में आपका गला घोंट कर मार दिया गया। इस तरह सिलसिला अहमदिया हक्का इस्लामिया के पहले शहीद और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इल्हान शातान तुज़बहान के पहले मिसदाक़ ने काबुल की की पत्थरीली धरती पर अपने ख़ून से सिदक व सफा और बहादुरी की वह तारीख़ लिखी कि जो क़यामत तक सच्चाई के आशिकों के लिए मशाल का काम देगी।

इसके बाद, श्री राजेन्द्र सिंह बाजवा कैबिनेट सचिव पंजाब ने जलसा में सम्मिलित लोगों को सम्बोधित किया। उन्हों ने कहा कि मैं सब से पहले जमाअत अहमदिया को लोगों को मुबारकबाद देता हूं और मुझे विश्वास है कि पंजाब सरकार हमेशा जमाअत के साथ सहयोग करेगी। दुनिया को इस बात की ज़रूरत है कि हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद अनुयायी बढ़ते जाएं, तभी दुनिया में हत्याएं बंद हो सकती है और शांति के साथ लोग रह सकते हैं। अल्लाह तआला करे कि दुनिया में जमाअत अहमदिया फैल जाए ताकि जल्द से जल्द दुनिया में प्यार और मुहब्बत का माहौल हो अन्त में उन्होंने कहा कि मैं हुज़ूर को कादियान आने के दिल की गहराई से दावत देता हूं।

इसके बाद क्रोएशिया से पधारे लाने वाले एक प्रतिष्ठित अहमदी अतिथि आदरणीय सयाग मोदा ब्यूवोच साहिब ने अपने विचार व्यक्त फ़रमाए जिसका उर्दू अनुवाद आदरणीय मुज़फ़्फ़र अहमद नासिर साहिब नाज़िर इस्लाह वा इरशाद मरकज़िया व अफसर जलसा गाह ने पढ़कर सुनाया। उन्होंने बताया कि हमारे इस माननीय मेहमान क्रोएशिया से आए हैं आपने कहा था कि ख़ाकसार और मेरी पत्नी के अतिरिक्त चार आदमियों पर आधारित प्रतिनिधिमंडल जलसा सालाना कादियान में शामिल हुआ है। अनुसंधान के अनुसार, शायद हम पहले क्रोशियाई अहमदी पति पत्नी हैं जो कादियान की जलसा सालाना में बल्कान से आए हैं। जमाअत अहमदिया से हमारा संबंध 2015 ई में बुक फेअर से हुआ था। बाद में मैं मिशन के संपर्क में रहे और जमाअत के बारे में साहित्य का अध्ययन किया। 2016 में, जलसा सालाना यूके गए और हुज़ूर अनवर से मिलने का अवसर मिला। अहमदिया मिशन क्रोएशिया के साथ सम्पर्क जारी रहा। नमाज़ों, जुम्ओं और ईदों के लिए अहमदिया मस्जिद क्रोएशिया के मिशन से सम्पर्क जारी रखा। फिर 2017 में, जलसा सालाना यू.के में फिर से गए। लेकिन इस जलसा में हम अहमदी के रूप में शामिल हुए। जमाअत के संदेश के प्रचार के साथ साथ क्रोएशिया में ह्यूमेन्टी फर्सट के अधीन मानव कल्याण की कई परियोजना विनीत के अधीन काम कर रही हैं। महज़ अल्लाह तआला की कृपा से क्रोएशिया में जमाअत अहमदिया बहुत अच्छा नाम रखती है। अहमदी हो जाने के बाद ख़ाकसार और ख़ाकसार की पत्नी की बहुत इच्छा थी कि हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की पवित्र बस्ती देखें। इस साल जलसा सालाना में शामिल होने ने हमारी यह इच्छा पूरी कर दी अलहम्दो लिल्लाह। दिल्ली और कादियान में प्रवास के दौरान हमारे साथ जिस प्रेम और ईमानदारी का व्यवहार किया गया है और जिस उत्तम रंग में हमारा ध्यान रखा गया है इसके लिए हम सभी पदाधिकारियों और अन्य सेवा करने वालों के तहे दिल से आभारी हैं। आप इस पवित्र शहर में रहने वाले बहुत भाग्यशाली लोग हैं। अल्लाह तआला आप को ख़ुश रखे। कादियान का नाम और उसके सम्मान को दुनिया में बुलंदी होती चली जाए। आमीन।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيْلِ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/ मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad